DIGITAL EDITION
ISSUE NO. 39

लोटपोट

51 YEARS ANNIVERSARY

हँसी और मस्ती की पाठशाला

मोटू पतलू और

ईधन बचाओ... देश बचाओ..

थोड़ी सी अक्ल लड़ाओ ईधन बचाओं खुशियां पाओ..
XXIIOXI

मोटू पतलू बतायेंगे पेट्रोल/ डीजल बचाने के आसान तरीके..

VISIT…

LANZAROTE

Caliente.COM

लोटपोट

हँसी और मस्ती की पाठशाला

Visit:
www lotpot com

DIGITAL EDITION
ISSUE NO. 39

Founder
Lt. Sh. A.P. Bajaj

Chief Editor
P. K. Bajaj

Editor
Aman Bajaj

Joint-Editors
Anushka
Amisha

Editorial Department

Concept illusatration direction
Harvinder Mankkar

Editorial Address:
LOTPOT FORTNIGHTLY
A-5, Mayapuri, Phase-I,
New Delhi-110064.
Ph.: 28116120, 28117636
Fax .: 91-11-41833139
Email: edit@mayapurigroup.com
Web.: www.mayapurigroup.com

Printed at ARORBANS PRESS,
Shree S. L. Prakashan
A-5, Mayapuri, Phase-I, N.D.110064.

Owner, Publisher, Printer
Parmod Kumar Bajaj

Printing Place:
A-5, Mayapuri, Phase-I, New Delhi-110064.

संपादकीय

सही पाठ

एक संत के पास एक युवक आया। उसने संत से शांति का रास्ता पूछा। संत ने उसको उसी शहर में किसी सेठ के पास भेज दिया। सेठ ने युवक की बात सुनी। उसने युवक को बैठने के लिए कहा और अपने काम में व्यस्त हो गया। कभी वह ग्राहकों से बात करता, कभी फाइलें देखता, कभी मुनीम को निर्देश देता। काफी देर तक उसकी व्यस्तता देख युवक ने सोचा, यह मुझे क्या बताएगा, इसे तो दम भरने की भी फुर्सत नहीं है। अचानक सबसे बड़ा मुनीम हांफता हुआ आया और सेठ को संबोधित कर कहा, गजब हो गया। अपना मालवाही जहाज समुद्री तुफान में फंस गया है। उसके डूबने की आशंका है। सेठ बोला, मुनीम जी! अधीर क्यों हो रहे हैं? अनहोनी कुछ भी नहीं हुई है। जहाज डूबने की नियति थी तो उसे कोई कैसे बचा सकता है? सेठ की बात सुन कर मुनीम कुछ आश्वस्त होकर चला गया। दो घंटे बाद मुनीम जी फिर वापस आए और उल्लासित होकर बोले, ‘सेठ जी! तुफान शांत हो गया। हमारा जहाज डूबा नहीं, सुरक्षित तट पर आ गया। माल उतारते ही दुगुनी कीमत में बिक गया। सेठ पहले की ही तरह शांत और गंभीर रहा। फिर बोला, मुनीम जी! इसमें खुशी की क्या बात है? व्यापार में घाटा और मुनाफा होता ही रहता है। पैसा आता है तो जा भी सकता है। युवक साक्षी भाव से सेठ का प्रत्येक व्यवहार देख रहा था। वह बोला, सेठ साहब! मैं जाता हूँ। मुझे आपके जीवन से सही पाठ मिल गया। अनुकूल और प्रतिकूल दोनों ही स्थितियों में संतुलन बनाए रखना, यही शांति का अमोघ उपाय है।

लोटपोट LOTPOT

LOTPOT title is registered with the R.N.I.,Govt. of India. All rights are reserved with publisher for every content published in Lotpot. Nothing should be reproduced in any form without the permission of publisher. All contents published in the Lotpot are work of fiction and any resemblence to people,place etc is purely incidental. Illustrations are based on the imagination of artist and editor and /or pubisher are not responsible for it. Editor and publisher may not be in agreement with the opinion of writers over the published contents. If any body has any objection towards any published content, they are welcome to submit the same with the publisher and it will be published as well. All disputes will be subject to the jurisdiction of Delhi only.Rs 4/- surcharge extra for Nepal, Srilanka, Dubai and other Gulf countries.

नटखट नीटू

○ हरविन्द्र मांकड

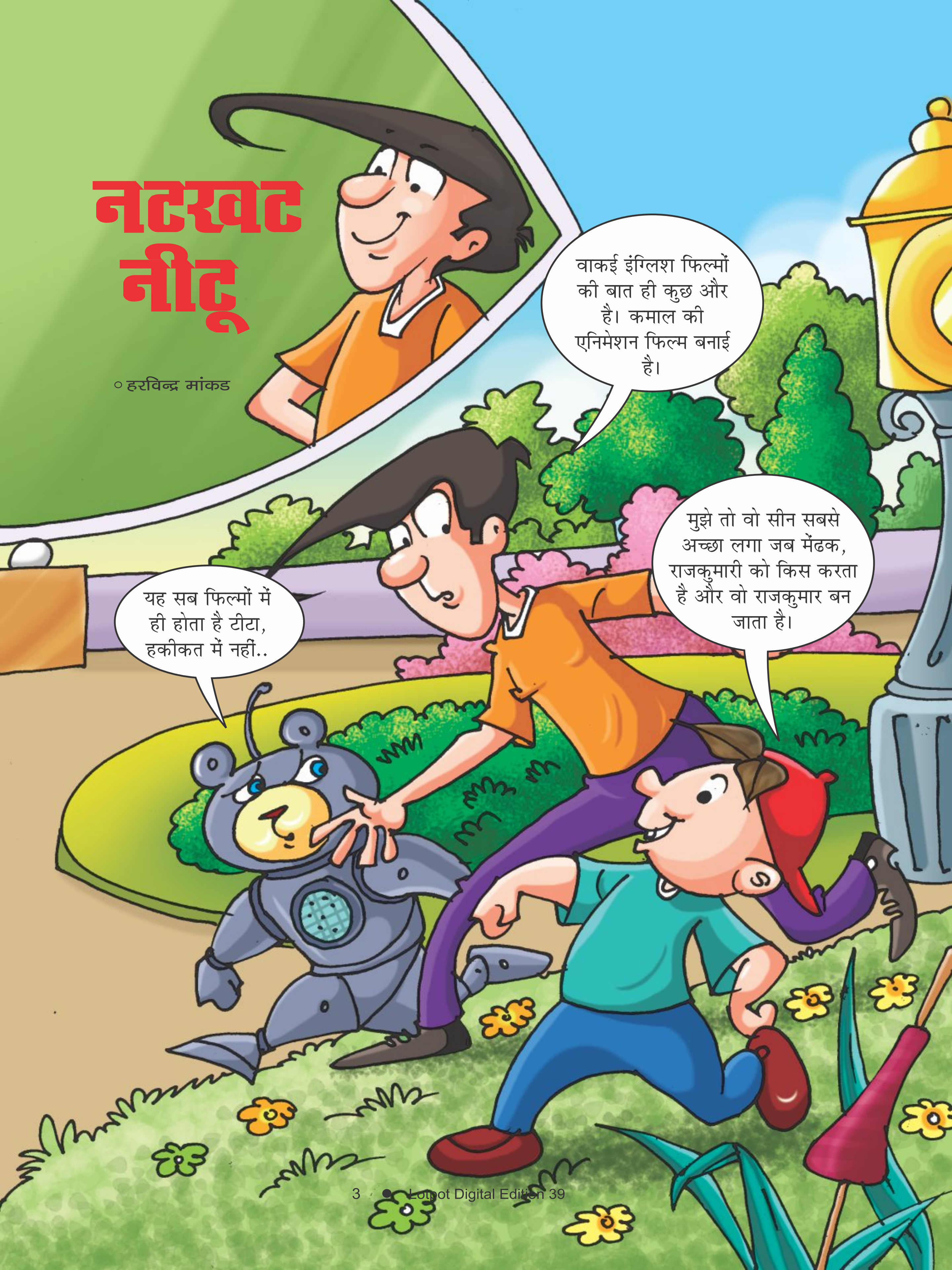
वाकई इंग्लिश फिल्मों की बात ही कुछ और है। कमाल की एनिमेशन फिल्म बनाई है।
मुझे तो वो सीन सबसे अच्छा लगा जब मेंढक, राजकुमारी को किस करता है और वो राजकुमार बन जाता है।
यह सब फिल्मों में ही होता है टीटा, हकीकत में नहीं..

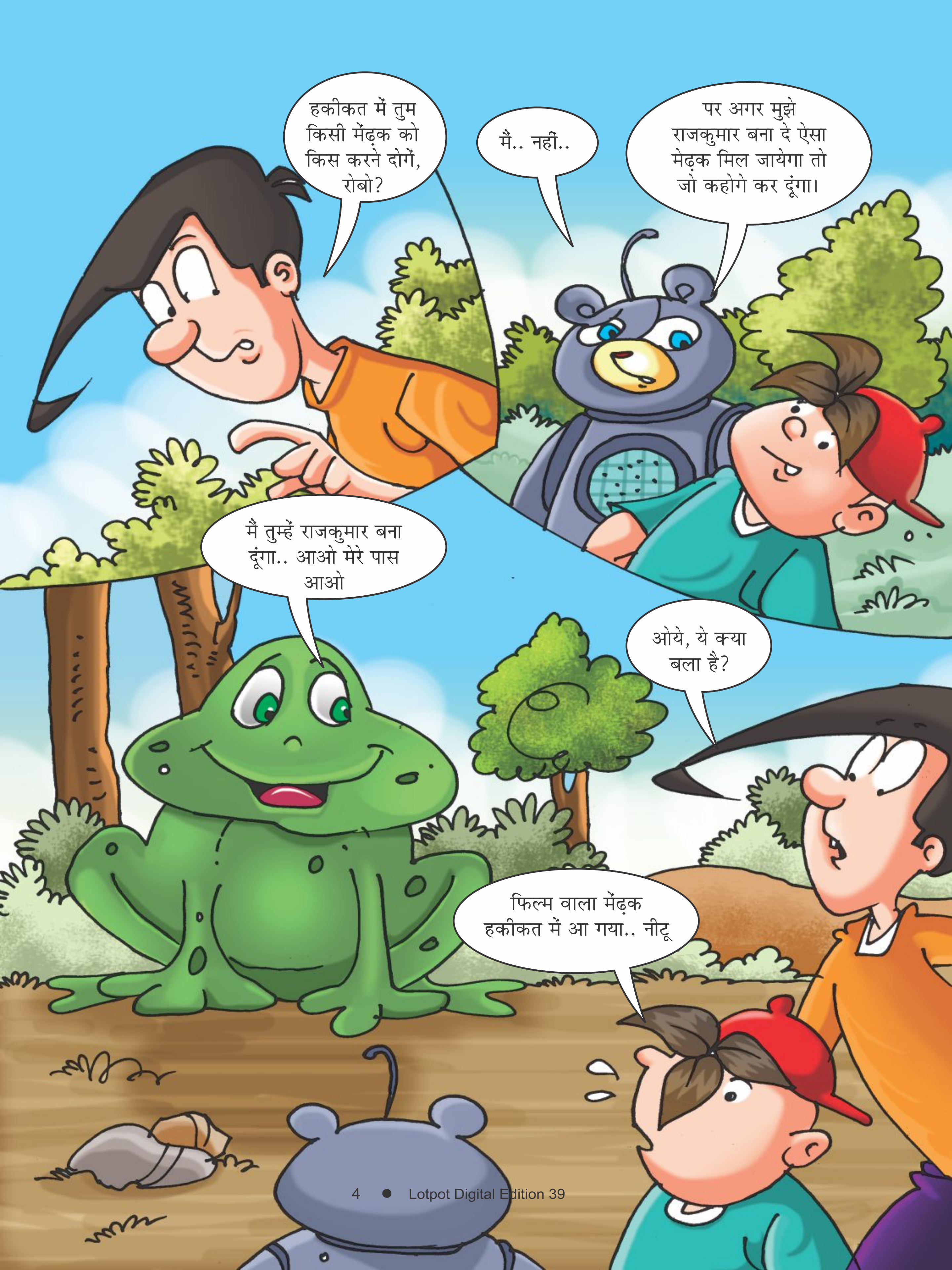
हकीकत में तुम किसी मेंढ़क को किस करने दोगें, रोबो?
मैं.. नहीं..
पर अगर मुझे राजकुमार बना दे ऐसा मेढ़क मिल जायेगा तो जो कहोगे कर दूंगा।
मै तुम्हें राजकुमार बना दूंगा.. आओ मेरे पास आओ
ओये, ये क्या बला है?
फिल्म वाला मेंढ़क हकीकत में आ गया.. नीटू

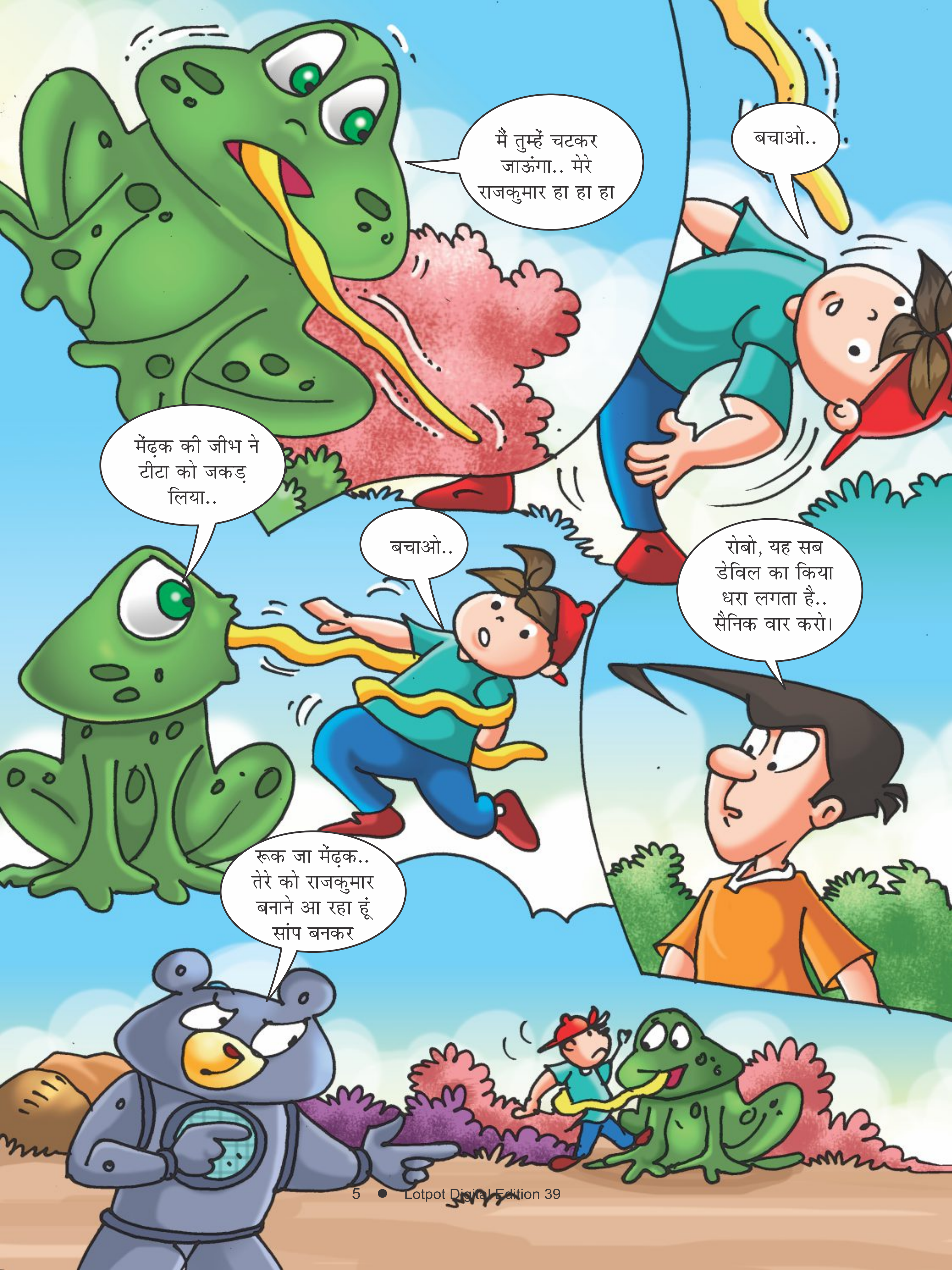
मैं तुम्हें चटकर जाऊंगा.. मेरे राजकुमार हा हा हा
बचाओ..
मेंढ़क की जीभ ने टीटा को जकड़ लिया..
बचाओ..
रोबो, यह सब डेविल का किया धरा लगता है.. सैनिक वार करो।
रूक जा मेंढ़क.. तेरे को राजकुमार बनाने आ रहा हूं सांप बनकर

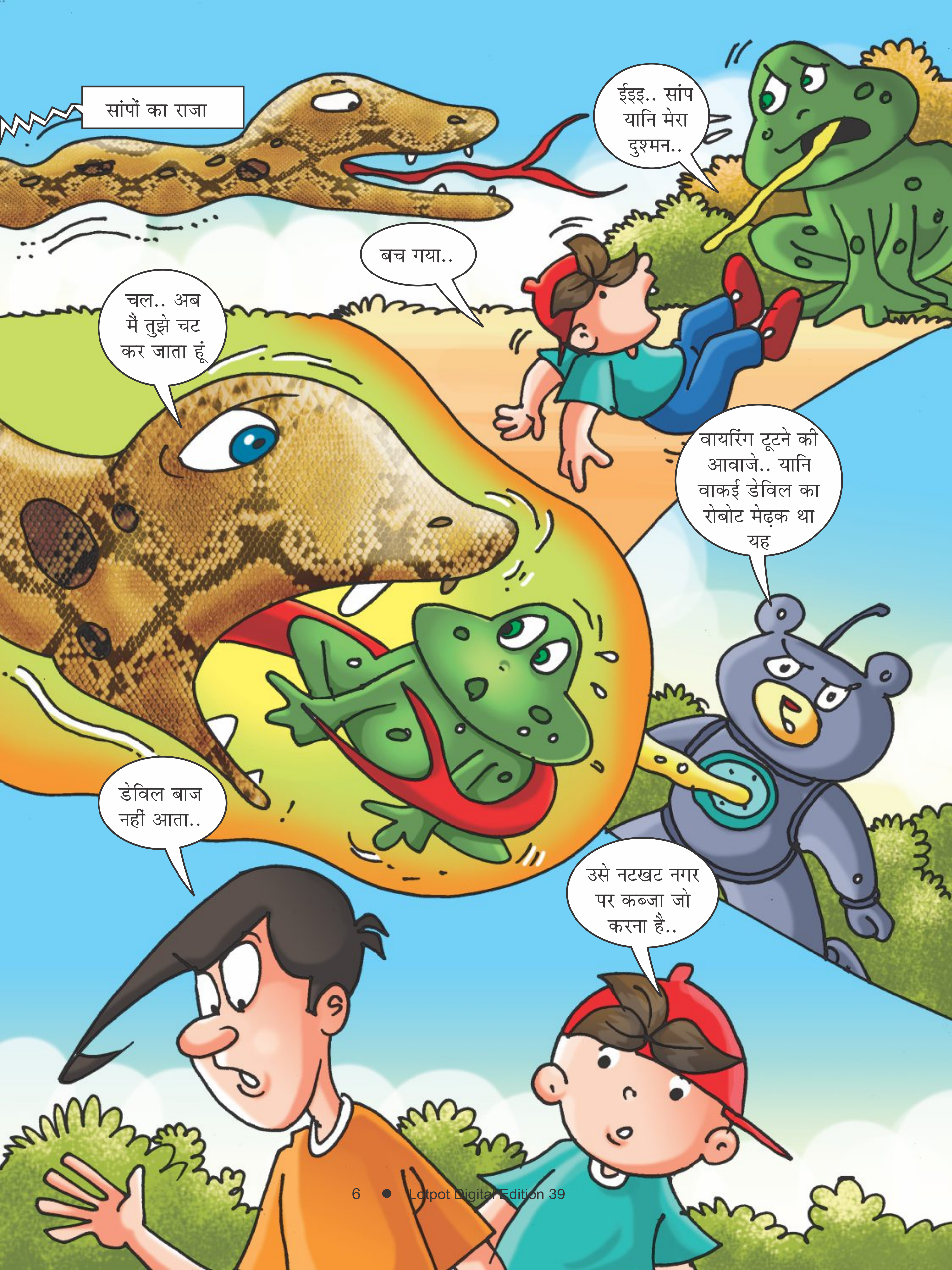
सांपों का राजा
ईइइ.. सांप यानि मेरा दुश्मन..
बच गया..
चल.. अब मैं तुझे चट कर जाता हूं
वायरिंग टूटने की आवाजे.. यानि वाकई डेविल का रोबोट मेढ़क था यह
डेविल बाज नहीं आता..
उसे नटखट नगर पर कब्जा जो करना है..

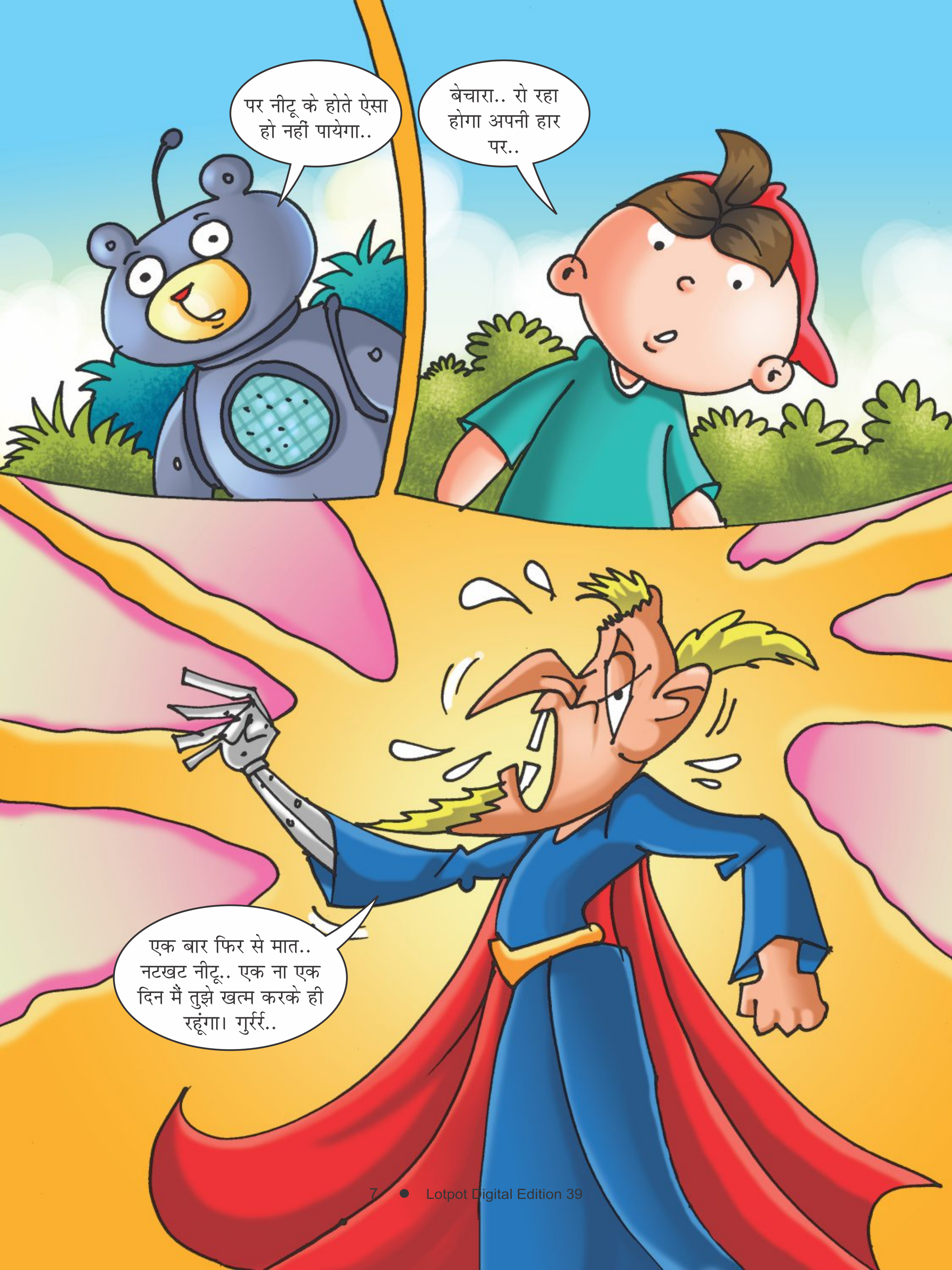
पर नीटू के होते ऐसा हो नहीं पायेगा..
बेचारा.. रो रहा होगा अपनी हार पर..
एक बार फिर से मात.. नटखट नीटू.. एक ना एक दिन मैं तुझे खत्म करके ही रहूंगा। गुर्रर..

बाल कहानी

धन का मोल

एक सेठ था वह बड़ा ही कंजूस था जीवन में उसने बहुत धन कमाया पर कोड़ी-कोड़ी दांत में दबाकर रखी। कभी किसी को एक भी पैसा नहीं दिया। यहां तक कि अपने बीवी बच्चों को भी पैसे को हाथ न लगाने दिया। नतीजा ये निकला कि उसकी पत्नी और बच्चे उससे कटे कटे रहने लगे। पत्नी तो उससे बहुत कम बात करती थी। दोनों बेटों के साथ भी पैसे की झिकझिक लगी रहती थी। दोनों बेटे जवान हो गये थे पर सेठ ने अब भी सारा व्यापार अपने ही हाथों में रखा हुआ था। लड़के पैसे पैसे को तरसते। मजबूर होकर वे बही खाते में गड़बड़ करके या दुकान का माल गुपचुप बेचकर पैसे हासिल करते थे। सेठ तो सारा धन तिजोरी में बंद रखता। उसे जब बेटों की बेईमानी का पता चला तो उसे बहुत गुस्सा आया और वह उनसे हिसाब मांगने लग गया। जवाब में बेटे उसे ही उल्टी सीधी सुनाकर चले जाते।

एक दिन सेठ अकेला दुकान पर बैठा था कि एक गरीब सा दिखने वाला आदमी उसकी दुकान पर आया। उसके कपड़े भी फटे थे वह सेठ से

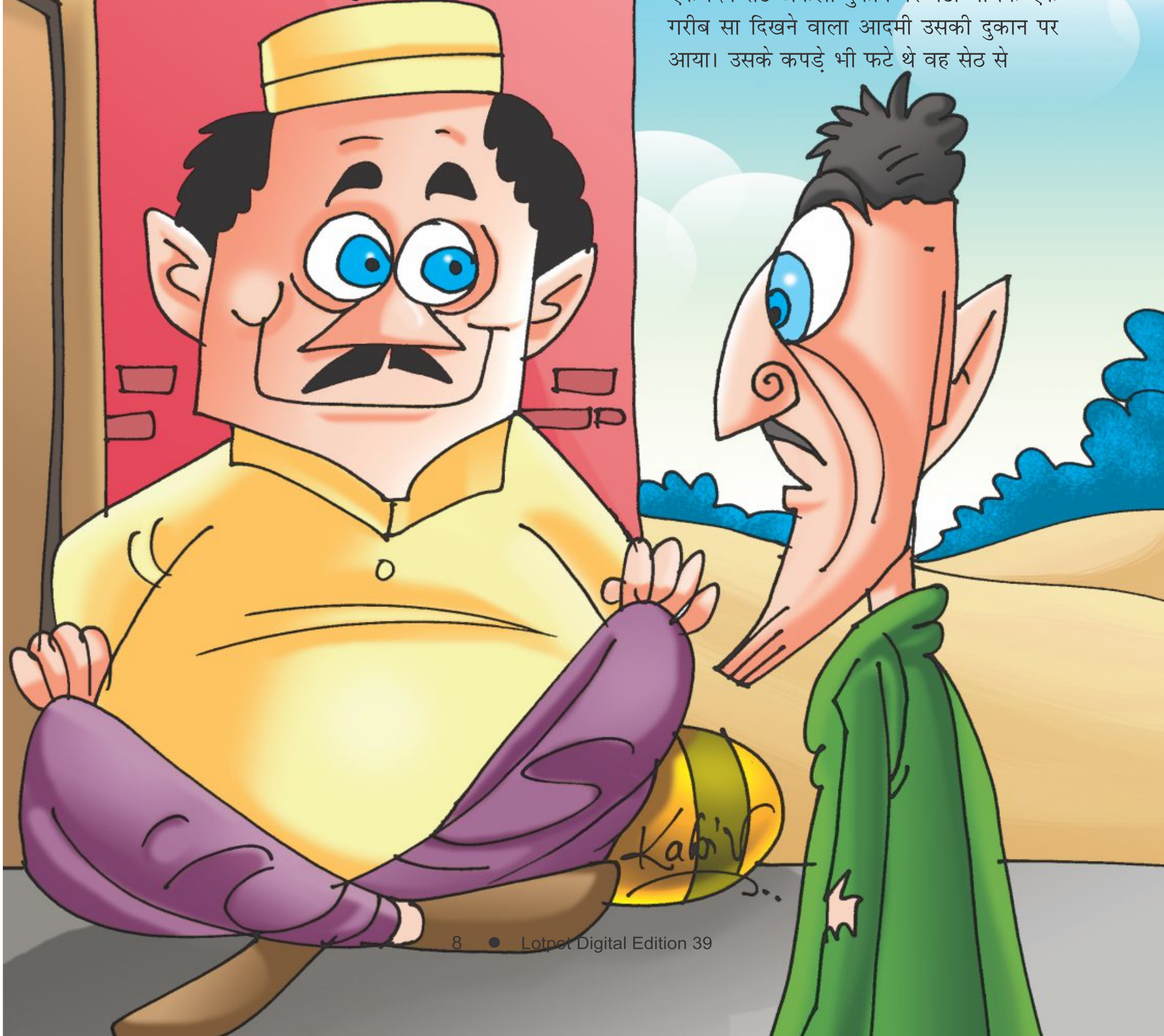

बोला–'सेठ जी सुना है आप नगर के सबसे अमीर आदमी हो। मैं बहुत गरीब हूं मुझे कुछ खरीदना है। आप क्या कुछ पैसे देंगे। बदले में मैं भगवान से प्रार्थना करूंगा कि वह आपका धन दुगना कर दे।' सेठ ने इससे पहले कभी दान पुण्य में पैसा खर्च नहीं किया था पर आज धन दुगना होने की बात सुनकर उसे लगा थोड़े पैसे मगंल को देने में कोई नुकसान नहीं है। वह बोला.. 'ठीक है बताओं कितने पैसे चाहिए तुम्हे?' 'कुछ ज्यादा नहीं, असल में मेरी पत्नी मुझसे नफरत करती है सीधे मुंह बात तक नहीं करती। बस आप मुझे इतने पैसे दे दीजिए जिससे मैं पत्नी का प्यार और विश्वास खरीद सकूं।

धन से और चाहे जो कुछ खरीद लो पर पत्नी का सुख नहीं खरीदा जा सकता ये मेरा अनुभव है। मेरी पत्नी भी तुम्हारी पत्नी जैसी है। कुछ और खरीदना हो तो मांगो पैसे।' 'मेरे तो बेटे भी नालायक और कपूत है। मेरा सम्मान नहीं करते है बस मुझे इतने पैसे दे दीजिये जिससे मैं बेटों का प्यार खरीद सकूं। 'बेटों का प्यार खरीदा जा सकता तो क्या मैं न खरीद लेता। इतना धन है मेरे पास। मेरे बेटे भी तुम्हारी बेटों की तरह नीरस रूखे और कपूत है।' सेठ ने नि:श्वास भरा। 'चलिये वो भी न सही पर नींद तो खरीद सकूंगा, मुझे रात भर नींद नहीं आती। बस कुछ धन दे दीजिये मैं आज ही नींद खरीदूंगा।

पागल तो नहीं हो गए' सेठ हंसता हुआ बोला–'भला नींद भी पैसों से खरीदी जा सकती है? मैं खुद अनिद्रा का रोगी हूं रात भर बिस्तर में करवटें बदलता रहता हूं पर नींद पास भी नहीं फटकती। सेठ गरीब के पागलपन पर हंसा–मेरा मन कितना अशांत है तुम नहीं जानते पर फिर भी मैं मानसिक शान्ति आज तक नहीं खरीद पाया। 'फिर तो आपके रूपये पैसे पत्थरों जैसे ही हैं जिन पैसों से पत्नी और बच्चों का प्यार, नींद मानसिक शान्ति कुछ नही खरीदा जा सकती, वो धन धन नहीं कचरा है। उसे फिर तिजौरी में बंद करके सांप की तरह कुंडली मारकर उसकी रक्षा में क्यों दिन रात लगे हो? मैं तो आपको अमीर समझता था पर आप तो मुझसे भी ज्यादा गरीब हो।'

और झूमता झामता गरीब वहां से चला गया। सेठ हक्का बक्का बैठा रहा। गरीब की बातें उसे परेशान कर रही थीं। गरीब सच तो कह रहा था। जीवन में उसे इतना धन होते हुये भी कोई सुख नहीं मिला। वह कितना दुखी और अकेला है। सेठ के मन में वैराग सा जाग गया। यह बदलाव देखकर पत्नी भी पति का ध्यान रखने लगी। उसने सारा व्यापार बेटों को सौंप दिया और शेष जीवन धर्मकार्य और पूजा पाठ में बिताया।

बच्चों में भोजन के प्रति प्रत्यूर्जता (एलर्जी)

1. कुछ खाने की चीज़ों के प्रति एलर्जी इस कारण होती है क्योंकि पाचन क्रिया की प्रतिक्रिया कई प्रकार की प्रोटीन के प्रति अनुकूल नहीं होती।

2. लगभग आठ प्रतिशत बच्चे जिनकी आयु एक वर्ष तक होती हैं कुछ खाने की चीज़ों के प्रति एलर्जिक होते हैं। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते जाते हैं, यह एलर्जी कम होती जाती है।

3. लगभग दो-चार प्रतिशत बच्चे ऐसे होते हैं जिनमें कुछ खाद्य पदार्थों के प्रति एलर्जी बड़े होने तक बनी रहती है।

4. कई खाद्य पदार्थ जैसे मछली, मूंगफली आदि ऐसे हैं जिनके प्रति एलर्जी बड़ी आयु तक बनी रहती है। अधिकांश खाने की चीज़ों के प्रति एलर्जी आयु के साथ कम हो जाती है।

5. एक से दो वर्ष आयु के लगभग पच्चीस प्रतिशत बच्चों में गाय के दूध के प्रति एलर्जी पाई जाती है।

6. एक-दो प्रतिशत बच्चे अंडों के प्रति एलर्जिक होते हैं किन्तु बड़े होने पर वे सामान्य हो जाते हैं।

7. आधिकांश व्यक्ति जो मूंगफली के प्रति एलर्जिक होते हैं। शुद्ध मूंगफली के तेल के प्रति एलर्जिक नहीं होते।

8. कुछ शिशु और कम आयु के बच्चे सोयाबीन के प्रति एलर्जिक होते हैं। सोयाबीन के प्रति एलर्जी से मौत की कोई संभावना नहीं होती। सोयाबीन के तेल से आमतौर पर किसी को भी एलर्जी नहीं होती।

9. भारत में अनेक व्यक्तियों को किसी विशेष दाल से भी एलर्जी होती है।

बाल कहानी

प्रार्थना और भगवान

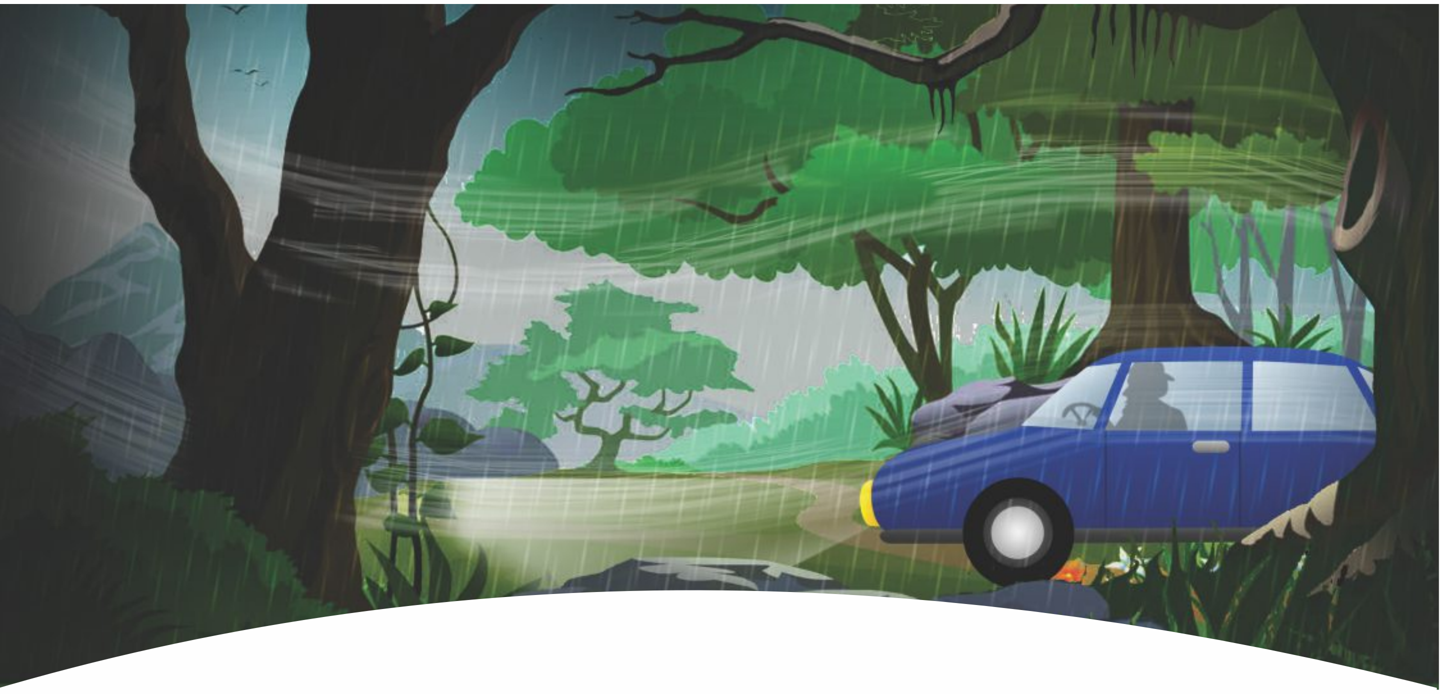

डॉ. मार्क एक प्रसिद्ध कैंसर स्पैशिलिस्ट हैं, एक बार किसी सम्मेलन में भाग लेने के लिए किसी दूर के शहर जा रहे थे। वहां उनको उनकी नई मैडिकल रिसर्च के महान कार्य के लिए पुरस्कृत किया जाना था। वे बड़े उत्साहित थे व जल्दी से जल्दी वहां पहुंचना चाहते थे। उन्होंने इस शोध के लिए बहुत मेहनत की थी। बड़ा उतावलापन था, उनका उस पुरस्कार को पाने के लिए।

उड़ने के लगभग दो घण्टे बाद उनके जहाज़ में तकनीकी खराबी आ गई, जिसके कारण उनके हवाई जहाज को आपातकालीन लैंडिंग करनी पड़ी। डा. मार्क को लगा कि वे अपने सम्मेलन में सही समय पर नहीं पहुंच पाएंगे, इसलिए उन्होंने स्थानीय कर्मचारियों से रास्ता पता किया और एक टैक्सी कर ली, सम्मेलन वाले शहर जाने के लिए। उनको पता था कि अगली फ्लाइट 10 घण्टे बाद है। टैक्सी तो मिली लेकिन ड्राइवर के बिना इसलिए उन्होंने खुद ही टैक्सी चलाने का निर्णय लिया।

जैसे ही उन्होंने यात्रा शुरु की कुछ देर बाद बहुत तेज, आंधी-तूफान शुरु हो गया। रास्ता लगभग दिखना बंद सा हो गया। इस आपा-धापी में वे गलत रास्ते की ओर मुड़ गए। लगभग दो घंटे भटकने के बाद उनको समझ आ गया कि वे रास्ता भटक गए हैं। थक तो वे गए ही थे, भूख भी उन्हें बहुत ज़ोर से लग आई थी। उस सुनसान सड़क पर भोजन की तलाश में वे गाड़ी इधर-उधर चलाने लगे। कुछ दूरी पर उनको एक झोंपड़ी दिखाई दी।

झोंपड़ी के बिल्कुल नजदीक उन्होंने अपनी गाड़ी रोकी। परेशान होकर गाड़ी से उतरे और उस छोटे से घर का दरवाज़ा खटखटाया। एक स्त्री ने दरवाज़ा खोला। डा. मार्क ने उन्हें अपनी स्थिति बताई और एक फोन करने की इजाजत मांगी। उस स्त्री ने बताया कि उसके यहां फोन नहीं है। फिर भी उसने उनसे कहा कि आप अंदर आइए और चाय पीजिए। मौसम थोड़ा ठीक हो जाने पर, आगे चले जाना।

भूखे, भीगे और थके हुए डॉक्टर ने तुरंत हामी भर दी। उस

फ्रिज में इस्तेमाल करने पर अधिक समय तक सुरक्षित रखे जा सकेंगे खाद्य पदार्थ

नीली रोशनी से बैक्टीरिया खत्म..

नीली रोशनी में बैक्टीरिया को नष्ट करने की क्षमता होती है। शोधकर्ताओं को एक नए अध्ययन में इस बात के संकेत मिले है। इससे निकट भविष्ट में खाद्य पदार्थो को रासायनिक परिरक्षकों के बिना ही ज्यादा समय तक सुरक्षित रखना संभव हो सकेगा।

नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापूर के शोधकर्ताओं के एक दल ने पाया कि नीली एलइडी की रोशनी खाद्य पदार्थो को किसी परिरक्षक के समान ही बैक्टीरिया से सुरक्षित रखने में सक्षम है।

उन्होंनें देखा कि नीली एलइडी की रोशनी खाद्य पदार्थो पर आम तौर पर पाए जाने वाले विषाणुओं को खत्म करने में कारगर है इन विषाणुओं में ई. कोलाई और सालमोनेला विषाणु भी शामिल थे।

शोधकर्ताओं के अनुसार, यह रोशनी ठंडे तापमान में रखे गए खाद्य पदार्थो पर सबसे अधिक प्रभावी होती है। उनके मुताबिक, नीली एलइडी की बैक्टीरिया रोधी क्षमता के लिए चार डिग्री से 15 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त है। यह अम्लीय स्थिति वाले खाद्य पदार्थो पर भी काफी कारगर है। मसलन ताजा छिले फलों की सतह से यह बैक्टीरिया को दूर रखता है। प्रमुख शोधकर्ता प्रोफेसर युक ह्युन-ग्यून ने कहा, हमारा शोध कुदरती और न्यूनतम प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थो की बढ़ती मांग को पूरा कर सकता है। दरअसल मौजूदा डिब्बाबंद खाद्य पदार्थो में परिरक्षक डाले जाते है। जिनके संभाविक दुष्प्रभावों की वजह से लोग इनके मुकाबले कुदरती खाद्य पदार्थो को तरजीह देते है, जो स्वास्थ के लिहाज से भी बेहतर होता है। लेकिन नीली रोशनी इस समस्या का हल हो सकती है।

भाग-4

नहले पे दहला

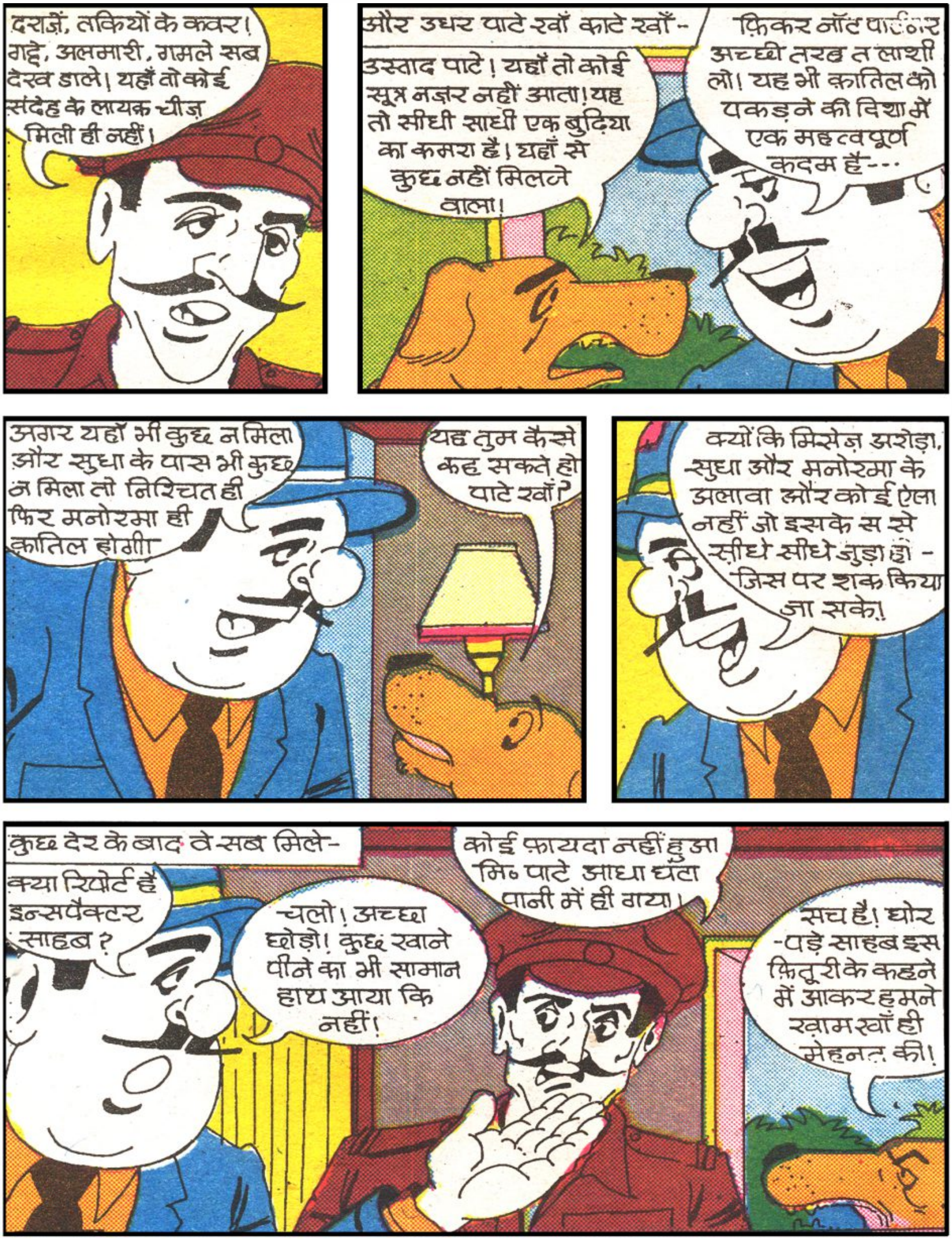
दराज़ें, तकियों के कवर, गद्दे, अलमारी, गमले सब देख डाले। यहाँ तो कोई संदेह के लायक चीज़ मिली ही नहीं।
और उधर पाटे खाँ काटे खाँ -
उस्ताद पाटे! यहाँ तो कोई सूत्र नज़र नहीं आता! यह तो सीधी साधी एक बुढ़िया का कमरा है। यहाँ से कुछ नहीं मिलने वाला।
फ़िकर नॉट पार्टनर अच्छी तरह तलाशी लो। यह भी कातिल को पकड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है---
अगर यहाँ भी कुछ न मिला और सुधा के पास भी कुछ न मिला तो निश्चित ही फिर मनोरमा ही क़ातिल होगी।
यह तुम कैसे कह सकते हो पाटे खाँ?
क्योंकि मिसेज़ अरोड़ा, सुधा और मनोरमा के अलावा और कोई ऐसा नहीं जो इस केस से सीधे सीधे जुड़ा हो - जिस पर शक किया जा सके।
कुछ देर के बाद वे सब मिले-
क्या रिपोर्ट है इन्सपैक्टर साहब?
चलो! अच्छा छोड़ो! कुछ खाने पीने का भी सामान हाथ आया कि नहीं!
कोई फ़ायदा नहीं हुआ मि० पाटे आधा घंटा पानी में ही गया।
सच है! घोर-पड़े साहब इस फ़ितूरी के कहने में आकर हमने खामखाँ ही मेहनत की।

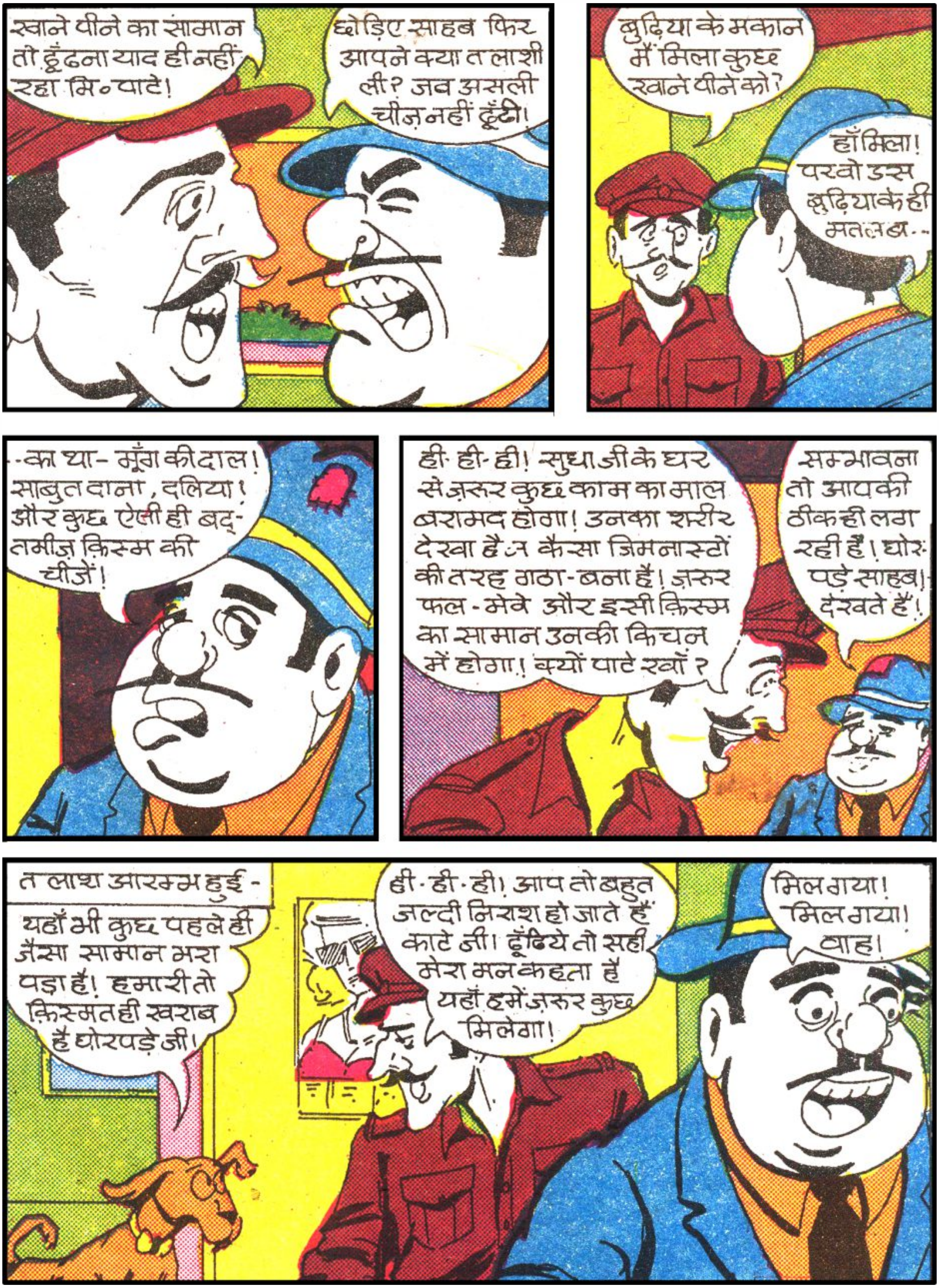
खाने पीने का सामान तो ढूंढना याद ही नहीं रहा मि० पाटे!
छोड़िए साहब फिर आपने क्या तलाशी ली? जब असली चीज़ नहीं ढूँढी।
बुढ़िया के मकान में मिला कुछ खाने पीने को?
हाँ मिला! पर वो इस बुढ़िया के ही मतलब- -
- -का था- मूँग की दाल! साबुत दाना, दलिया! और कुछ ऐसी ही बद्‌तमीज़ क़िस्म की चीजें!
ही-ही-ही! सुधा जी के घर से ज़रूर कुछ काम का माल बरामद होगा! उनका शरीर देखा है न कैसा जिमनास्टों की तरह गठा-बना है! ज़रूर फल-मेवे और इसी क़िस्म का सामान उनकी किचन में होगा! क्यों पाटे खाँ?
सम्भावना तो आपकी ठीक ही लग रही है! घोर-पड़े साहब! देखते हैं!
तलाश आरम्भ हुई -
यहाँ भी कुछ पहले ही जैसा सामान भरा पड़ा है! हमारी तो क़िस्मत ही खराब है घोरपड़े जी।
ही-ही-ही! आप तो बहुत जल्दी निराश हो जाते हैं पाटे जी। ढूँढिये तो सही मेरा मन कहता है यहाँ हमें ज़रूर कुछ मिलेगा!
मिल गया! मिल गया! वाह!

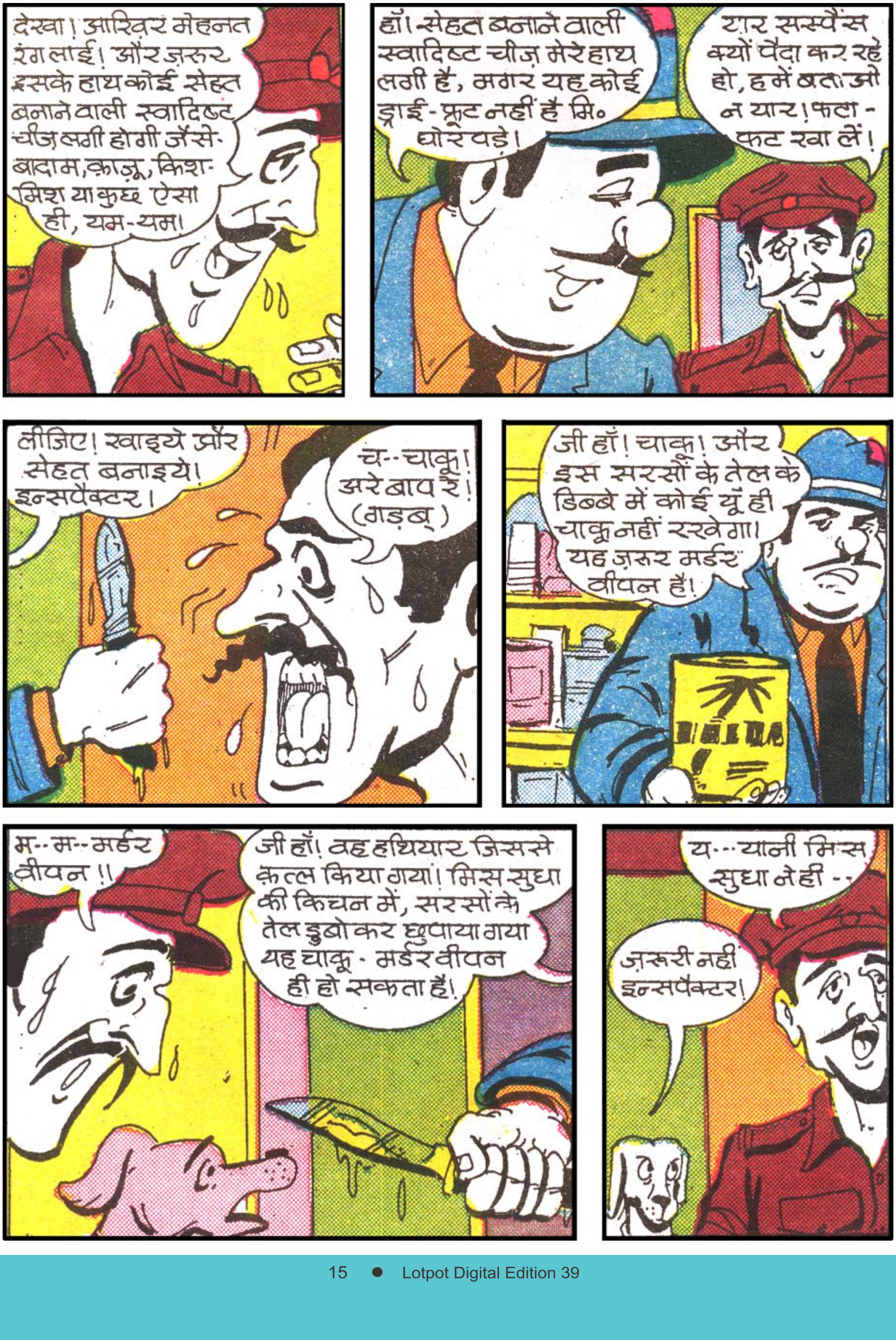
देखा! आखिर मेहनत रंग लाई! और ज़रूर इसके हाथ कोई सेहत बनाने वाली स्वादिष्ट चीज़ लगी होगी जैसे- बादाम, काजू, किशमिश या कुछ ऐसा ही, यम-यम!
हाँ! सेहत बनाने वाली स्वादिष्ट चीज़ मेरे हाथ लगी है, मगर यह कोई ड्राई-फ्रूट नहीं है मि० घोरपड़े!
यार सस्पैंस क्यों पैदा कर रहे हो, हमें बताओ न यार! फटा-फट खा लें!
लीजिए! खाइये और सेहत बनाइये! इन्सपैक्टर!
च--चाकू! अरे बाप रे! (गड़ब्)
जी हाँ! चाकू! और इस सरसों के तेल के डिब्बे में कोई यूँ ही चाकू नहीं रखेगा! यह ज़रूर मर्डर वीपन है!
म--म--मर्डर वीपन!!
जी हाँ! वह हथियार जिससे क़त्ल किया गया! मिस सुधा की किचन में, सरसों के तेल डुबो कर छुपाया गया यह चाकू - मर्डर वीपन ही हो सकता है!
य---यानी मिस सुधा ने ही--
ज़रूरी नहीं इन्सपैक्टर!

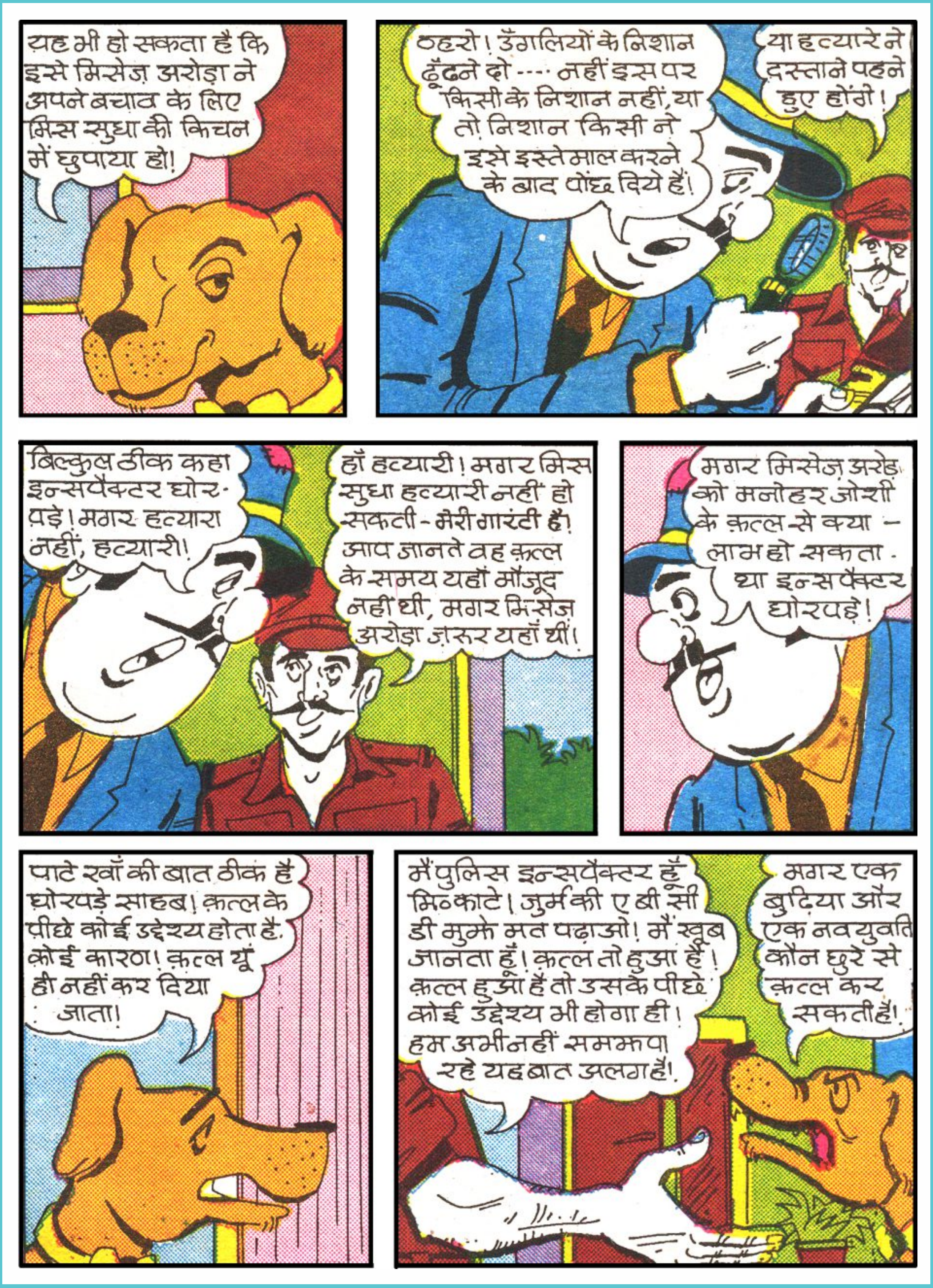
यह भी हो सकता है कि इसे मिसेज़ अरोड़ा ने अपने बचाव के लिए मिस सुधा की किचन में छुपाया हो।
ठहरो। उँगलियों के निशान ढूँढने दो ---- नहीं इस पर किसी के निशान नहीं, या तो निशान किसी ने इसे इस्तेमाल करने के बाद पोंछ दिये हैं।
या हत्यारे ने दस्ताने पहने हुए होंगे।
बिल्कुल ठीक कहा इन्सपैक्टर घोरपड़े। मगर हत्यारा नहीं, हत्यारी।
हाँ हत्यारी। मगर मिस सुधा हत्यारी नहीं हो सकती - मेरी गारंटी है। आप जानते वह क़त्ल के समय यहाँ मौजूद नहीं थी, मगर मिसेज़ अरोड़ा ज़रूर यहाँ थीं।
मगर मिसेज़ अरोड़ा को मनोहर जोशी के क़त्ल से क्या - लाभ हो सकता था इन्सपैक्टर घोरपड़े!
पाटे खाँ की बात ठीक है घोरपड़े साहब। क़त्ल के पीछे कोई उद्देश्य होता है. कोई कारण। क़त्ल यूँ ही नहीं कर दिया जाता।
मैं पुलिस इन्सपैक्टर हूँ झिंकाटे। जुर्म की ए बी सी डी मुझे मत पढ़ाओ! मैं खूब जानता हूँ। क़त्ल तो हुआ है। क़त्ल हुआ है तो उसके पीछे कोई उद्देश्य भी होगा ही। हम अभी नहीं समझ पा रहे यह बात अलग है।
मगर एक बुढ़िया और एक नवयुवति कौन छुरे से क़त्ल कर सकती है!

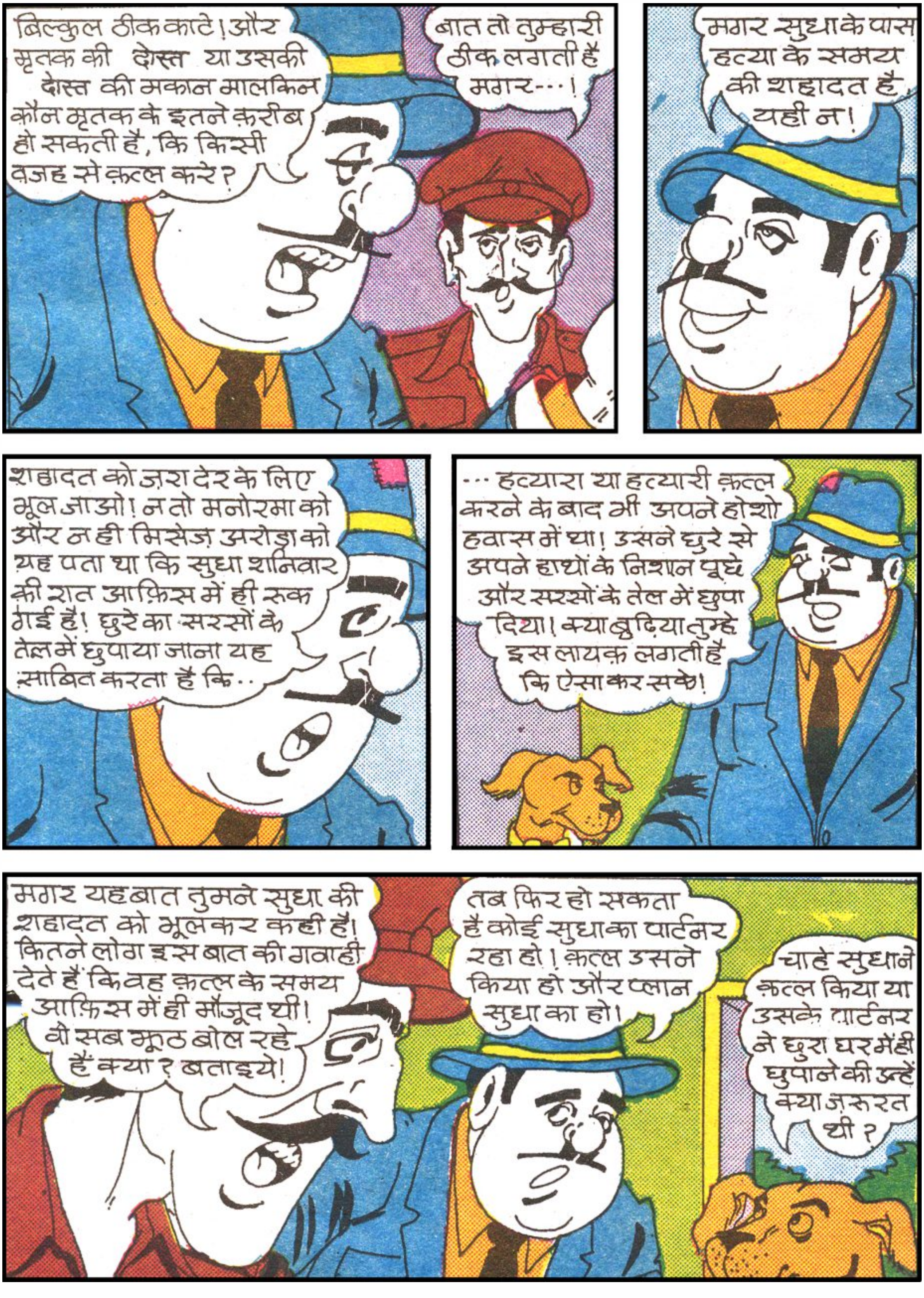
बिल्कुल ठीक काटे। और मृतक की दोस्त या उसकी दोस्त की मकान मालकिन कौन मृतक के इतने क़रीब हो सकती हैं, कि किसी वजह से क़त्ल करे?
बात तो तुम्हारी ठीक लगती है मगर---!
मगर सुधा के पास हत्या के समय की शहादत है, यही न!
शहादत को ज़रा देर के लिए भूल जाओ! न तो मनोरमा को और न ही मिसेज़ अरोड़ा को यह पता था कि सुधा शनिवार की रात आफ़िस में ही रुक गई है! छुरे का सरसों के तेल में छुपाया जाना यह साबित करता है कि..
...हत्यारा या हत्यारी क़त्ल करने के बाद भी अपने होशो हवास में था। उसने छुरे से अपने हाथों के निशान पूछे और सरसों के तेल में छुपा दिया। क्या बुढ़िया तुम्हे इस लायक़ लगती है कि ऐसा कर सके!
मगर यह बात तुमने सुधा की शहादत को भूलकर कही है। कितने लोग इस बात की गवाही देते हैं कि वह क़त्ल के समय आफ़िस में ही मौजूद थी! वो सब झूठ बोल रहे हैं क्या? बताइये!
तब फिर हो सकता है कोई सुधा का पार्टनर रहा हो! क़त्ल उसने किया हो और प्लान सुधा का हो।
चाहे सुधा ने क़त्ल किया या उसके पार्टनर ने छुरा घर में ही छुपाने की उन्हें क्या ज़रूरत थी?

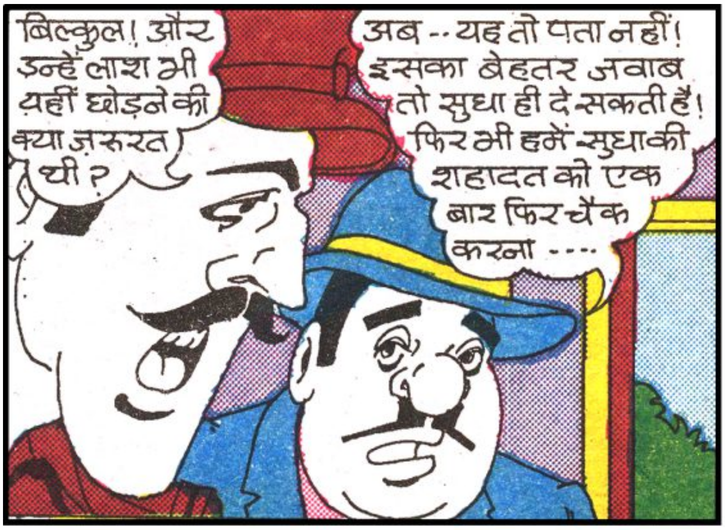
बिल्कुल! और उन्हें लाश भी यहीं छोड़ने की क्या ज़रूरत थी ?
अब -- यह तो पता नहीं! इसका बेहतर जवाब तो सुधा ही दे सकती है! फिर भी हमें सुधा की शहादत को एक बार फिर चैक करना ----

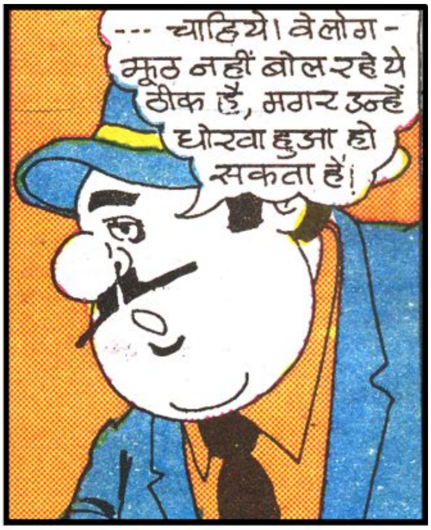
--- चाहिये। वे लोग - झूठ नहीं बोल रहे ये ठीक है, मगर उन्हें धोखा हुआ हो सकता है।

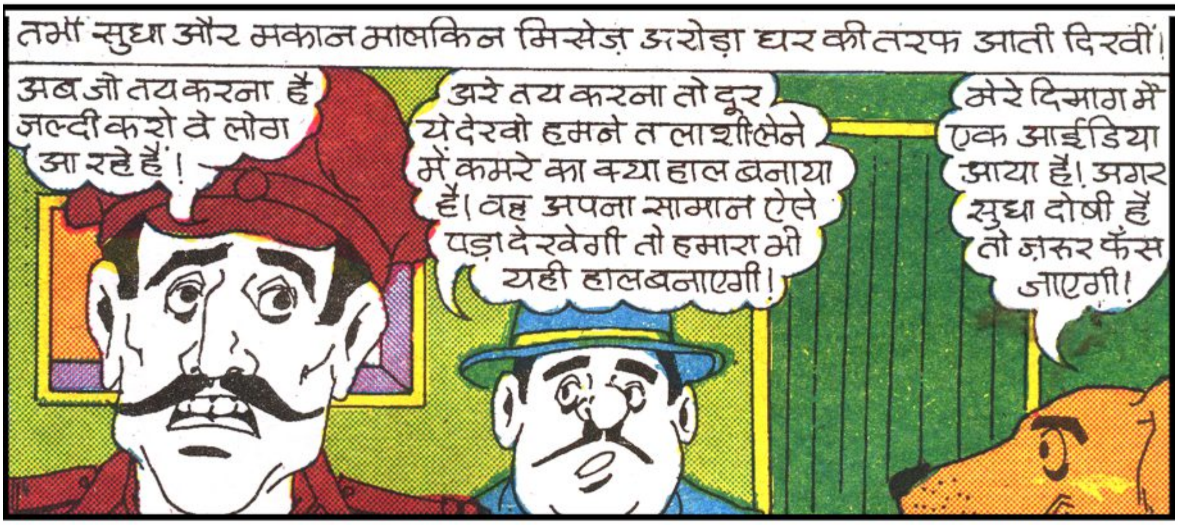
तभी सुधा और मकान मालकिन मिसेज़ अरोड़ा घर की तरफ आती दिखीं।
अब जो तय करना है जल्दी करो वे लोग आ रहे हैं!
अरे तय करना तो दूर ये देखो हमने तलाशी लेने में कमरे का क्या हाल बनाया है। वह अपना सामान ऐसे पड़ा देखेगी तो हमारा भी यही हाल बनाएगी!
मेरे दिमाग में एक आईडिया आया है। अगर सुधा दोषी है तो ज़रूर फँस जाएगी!

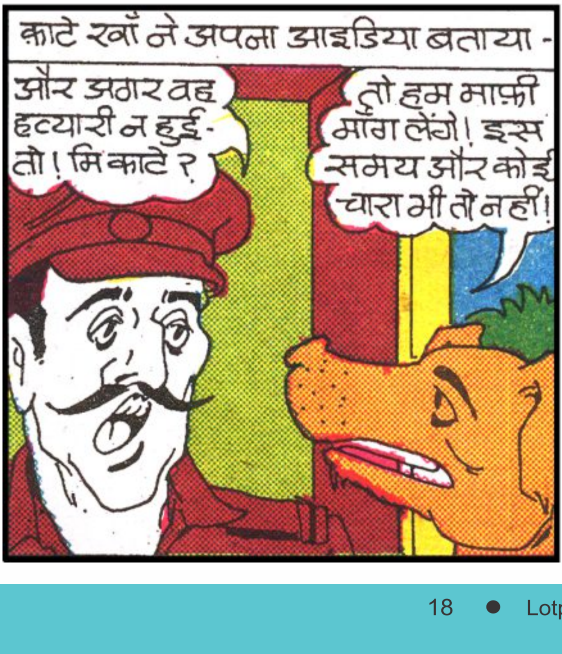
काटे खाँ ने अपना आइडिया बताया -
और अगर वह हत्यारी न हुई - तो! मि काटे ?
तो हम माफ़ी माँग लेंगे! इस समय और कोई चारा भी तो नहीं!

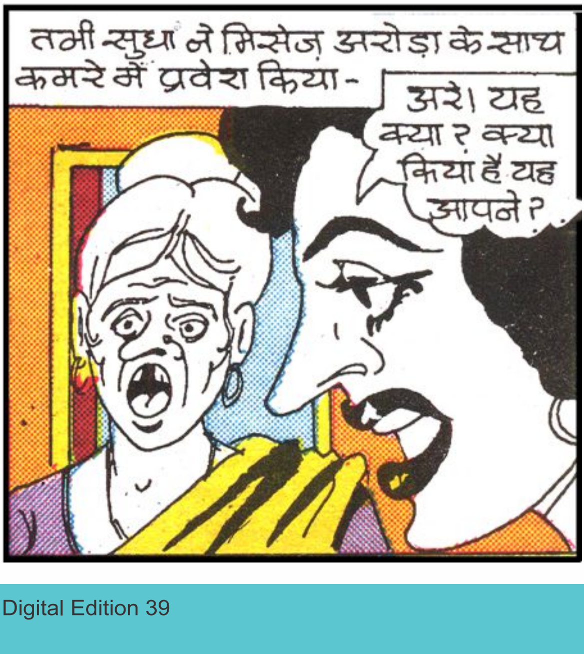
तभी सुधा ने मिसेज़ अरोड़ा के साथ कमरे में प्रवेश किया -
अरे! यह क्या ? क्या किया है यह आपने ?

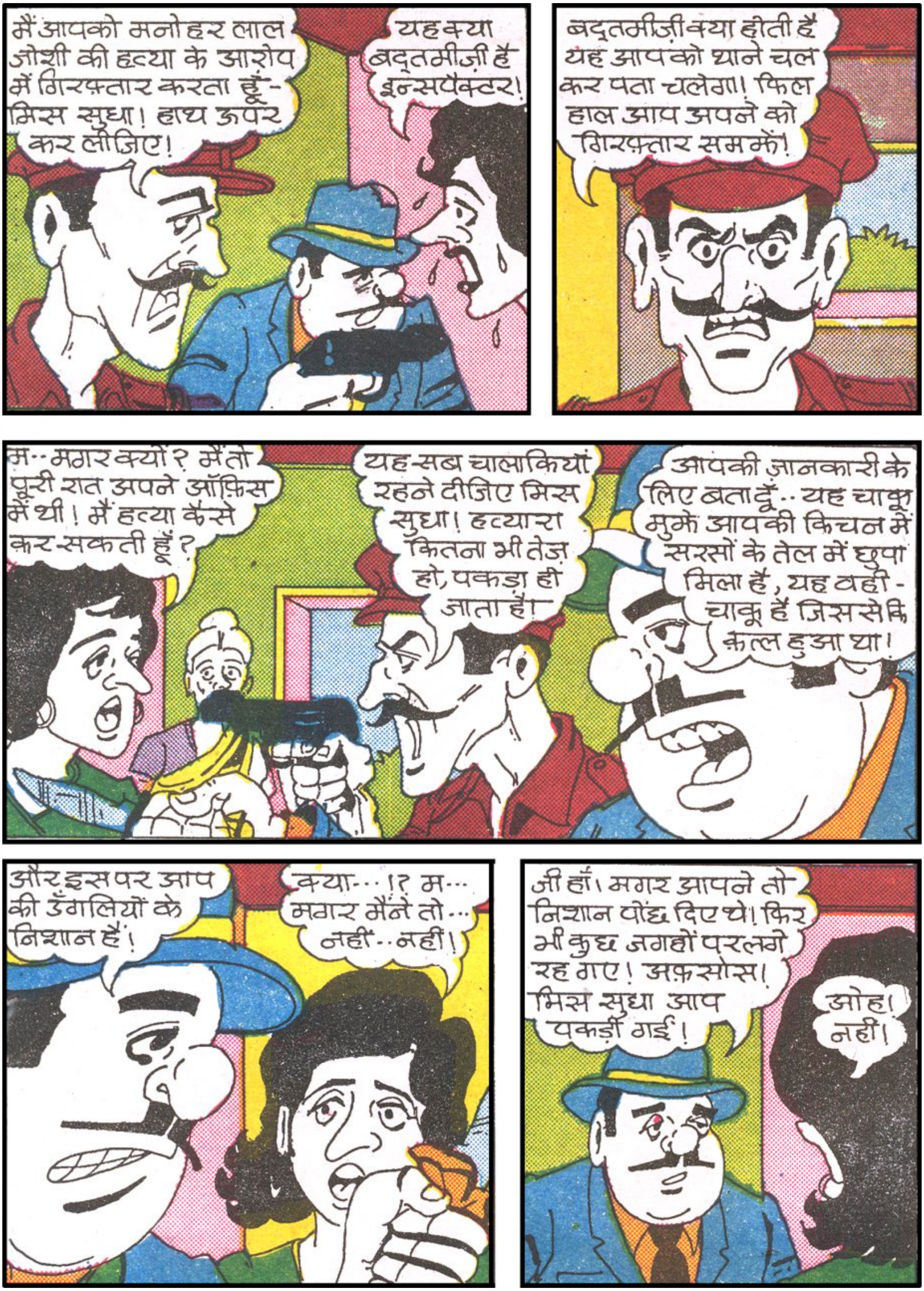
मैं आपको मनोहर लाल जोशी की हत्या के आरोप में गिरफ़्तार करता हूँ- मिस सुधा! हाथ ऊपर कर लीजिए!
यह क्या बदतमीज़ी है इन्सपैक्टर!
बदतमीज़ी क्या होती है यह आपको थाने चल कर पता चलेगा! फिलहाल आप अपने को गिरफ़्तार समझें!
म.. मगर क्यों? मैं तो पूरी रात अपने ऑफ़िस में थी! मैं हत्या कैसे कर सकती हूँ?
यह सब चालाकियां रहने दीजिए मिस सुधा! हत्यारा कितना भी तेज़ हो, पकड़ा ही जाता है!
आपकी जानकारी के लिए बता दूँ.. यह चाकू मुझे आपकी किचन में सरसों के तेल में छुपा मिला है, यह वही-चाकू है जिससे कि क़त्ल हुआ था!
और इस पर आप की उँगलियों के निशान हैं!
क्या...!? म... मगर मैंने तो... नहीं.. नहीं!
जी हां! मगर आपने तो निशान पोंछ दिए थे! फिर भी कुछ जगहों पर लगे रह गए! अफ़सोस! मिस सुधा आप पकड़ी गई!
ओह! नहीं!

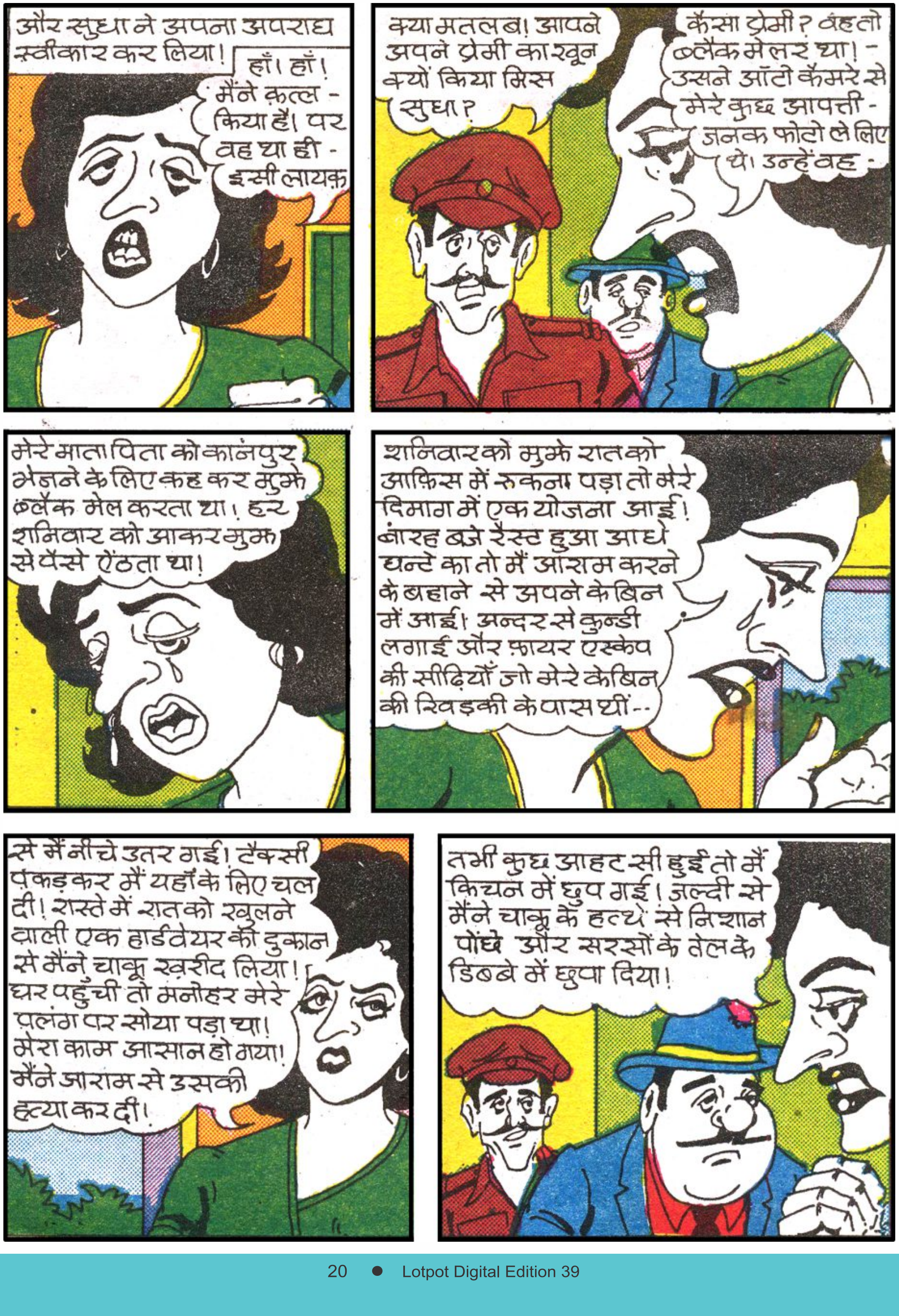
और सुधा ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया!
हाँ। हाँ! मैंने क़त्ल - किया है। पर वह था ही - इसी लायक़
क्या मतलब! आपने अपने प्रेमी का खून क्यों किया मिस सुधा?
कैसा प्रेमी? वह तो ब्लैक मेलर था! - उसने आँटो कैमरे से मेरे कुछ आपत्ती - जनक फोटो ले लिए थे। उन्हें वह -
मेरे माता पिता को कानपुर भेजने के लिए कह कर मुझे ब्लैक मेल करता था। हर शनिवार को आकर मुझ से पैसे ऐंठता था।
शनिवार को मुझे रात को आफ़िस में रुकना पड़ा तो मेरे दिमाग में एक योजना आई। बारह बजे रैस्ट हुआ आधे घन्टे का तो मैं आराम करने के बहाने से अपने केबिन में आई। अन्दर से कुन्डी लगाई और फ़ायर एस्केप की सीढ़ियाँ जो मेरे केबिन की खिड़की के पास थीं--
से मैं नीचे उतर गई। टैक्सी पकड़ कर मैं यहाँ के लिए चल दी! रास्ते में रात को खुलने वाली एक हार्डवेयर की दुकान से मैंने चाकू ख़रीद लिया! घर पहुँची तो मनोहर मेरे पलंग पर सोया पड़ा था! मेरा काम आसान हो गया! मैंने आराम से उसकी हत्या कर दी।
तभी कुछ आहट सी हुई तो मैं किचन में छुप गई। जल्दी से मैंने चाकू के हत्थे से निशान पोंछे और सरसों के तेल के डिब्बे में छुपा दिया।

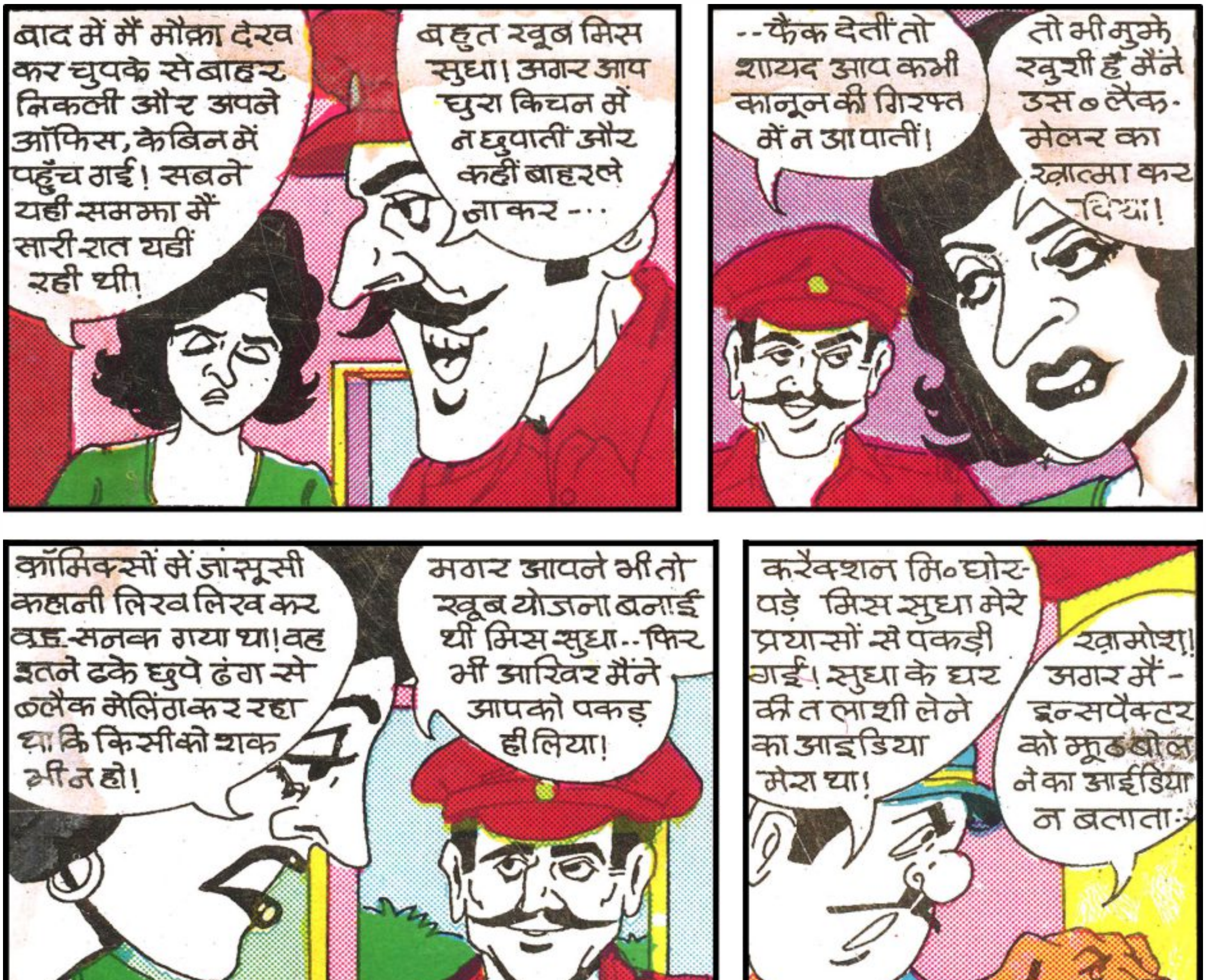
बाद में मैं मौक़ा देख कर चुपके से बाहर निकली और अपने ऑफिस, केबिन में पहुँच गई! सबने यही समझा मैं सारी रात यहीं रही थी।
बहुत खूब मिस सुधा! अगर आप छुरा किचन में न छुपातीं और कहीं बाहर ले जा कर --
--फैंक देतीं तो शायद आप कभी कानून की गिरफ्त में न आ पातीं!
तो भी मुझे खुशी है मैंने उस ब्लैक-मेलर का खात्मा कर दिया!
कॉमिक्सों में जासूसी कहानी लिख लिख कर वह सनक गया था! वह इतने ढके छुपे ढंग से ब्लैक मेलिंग कर रहा था कि किसी को शक भी न हो!
मगर आपने भी तो खूब योजना बनाई थी मिस सुधा--फिर भी आखिर मैंने आपको पकड़ ही लिया!
करैक्शन मि० घोर-पड़े मिस सुधा मेरे प्रयासों से पकड़ी गई! सुधा के घर की तलाशी लेने का आइडिया मेरा था!
खामोश! अगर मैं -इन्सपैक्टर को झूठ बोलने का आईडिया न बताता--
--तो मिस सुधा कभी अपने जुर्म का इक़बाल न करतीं!
क्या? तो मेरी उँगलियों के निशान छुरे पर नहीं मिले! आपने मुझे झूठ बोल कर फँसाया।
चाहे जो हो! आईडिया किस का था यह लड़ाई आप दोनों लड़ें! पकड़ा मैंने है!
गिरफ़्तार मैंने किय है! कल के अखबार में मेरी तारीफ़ ही होगी! याहू!

समाप्त

JUNGLE

जंगल

ऑस्प्रे

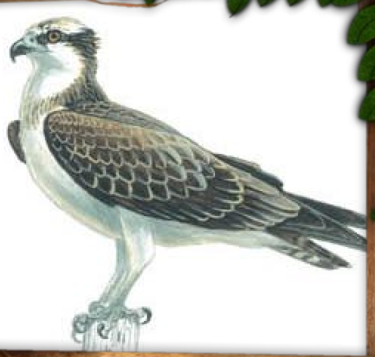

अंटार्कटिक महादेश को छोड़कर ऑस्प्रे लगभग सभी महादेशों में पाया जाता है। यह पक्षी मछलियों को बड़े चाव से खाता है। इसे सी हॉक भी कहा जाता है, क्योंकि मछली की तलाश में यह समुद्र के आस-पास ही मंडराता रहता है। यहाँ तक कि यह अपने घोंसले भी समुद्र के किनारे ही बनाता है। यह लगभग छह फीट लंबा होता है। ऑस्प्रे का ऊपरी हिस्सा भूरे रंग का होता है और इसके नीचे के हिस्से और पंखों पर काले धब्बे होते है। ऑस्प्रे अपने पैरों तथा पंजों की खास बनावट के कारण अलग अंदाज़ में अपना शिकार करता है। ऑस्प्रे के पैर में पाँच अंगूठे होते हैं, जिनमें चार एक समान लंबाई के तथा एक अंगूठा बाहर की ओर उल्टी दिशा में होता है। इसके अलावा, इसके पंजे सुई की तरह नुकीले होते हैं, जो शिकार के शरीर पर मज़बूत पकड़ बनाने में मदद करते हैं। ऑस्प्रे अक्सर अपने से दोगुनी बड़ी मछलियों का शिकार करता है। लेकिन कभी-कभी शिकार करने के क्रम में जब यह बड़ी मछलियों को पकड़ता है तो उनके अधिक वज़न होने के कारण खुद समुद्र में डूब जाता है और तुरंत उसकी मौत हो जाती है।

ताली बजाकर

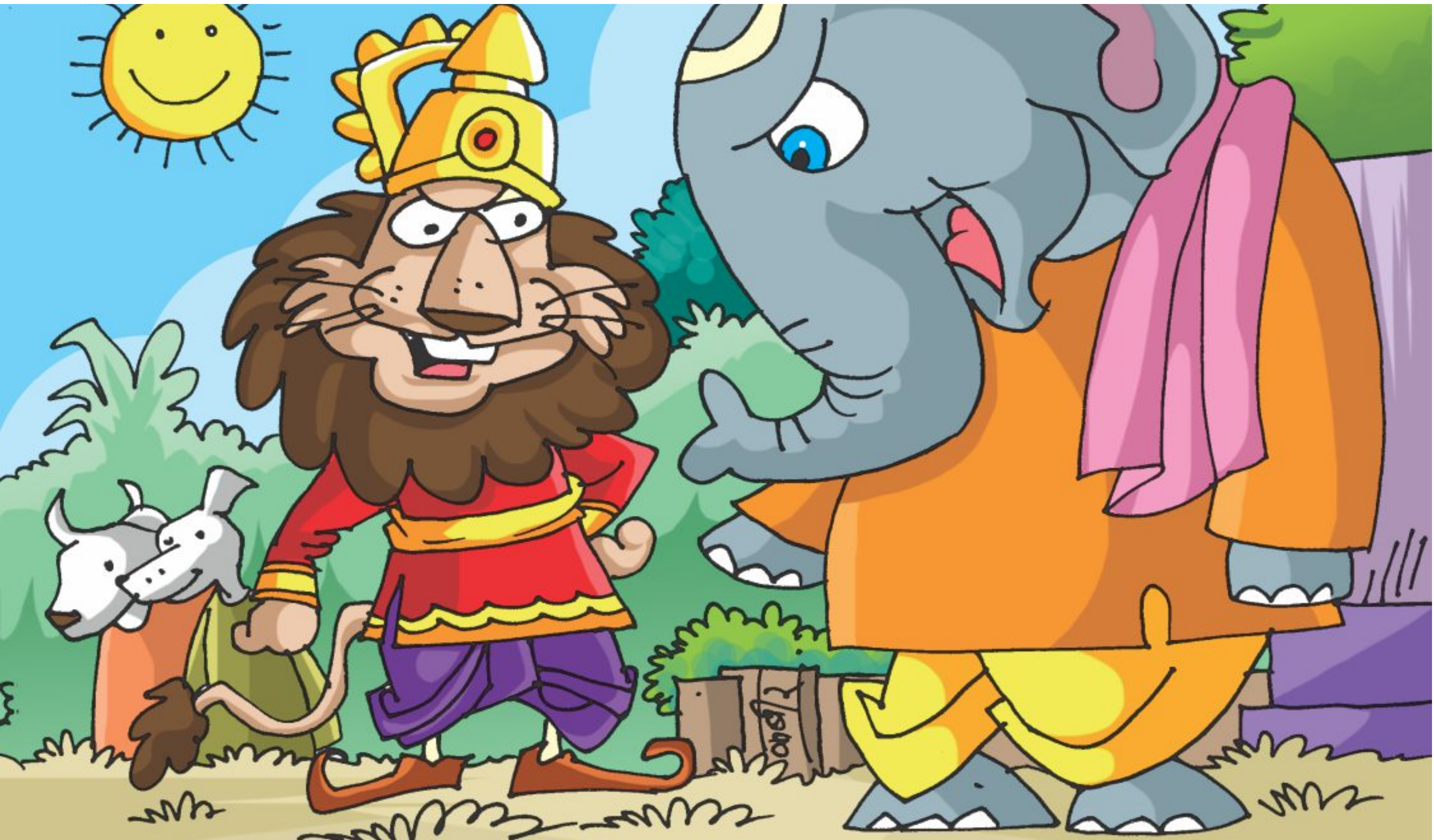

जंगल में जोनू शेर का दबदबा था। जंगल के सारे प्राणी उसकी आज्ञा का पालन करते थे। जोनू के शाही महल के रास्ते पर ही महात्मा नीकू हाथी की विशाल कुटिया थी। नीकू के उपदेश सुनने के लिए जोनू के साथ–साथ उसके तमाम मंत्रीगण भी जाया करते।

एक दिन महात्मा नीकू ने उपदेश के उपरांत कहा–'भाईयों। मैं तपस्या ग्रहण करने के लिए स्वामी धर्मा बन्दर के आश्रम में जा रहा हूं। स्वामी धर्मा का आश्रम यहां से सैंकड़ों मील दूर नीले पर्वत के पीछे है, और मैं ठीक दो वर्ष बाद वापस आऊंगा। और मैं चाहता हूं तब तक जंगल में शान्ति बनी रहे। आप लोग सुख–दुख में एक दूसरे की मदद किया करें। यह सुनकर जोनू शोर ने बड़ी अकड़ के साथ कहा– 'महात्माजी आप किसी तरह की चिन्ता मत कीजिए। जंगल की प्रजा की रक्षा करना मेरा फर्ज है।' जोनू ने दूसरे दिन महात्मा नीकू हाथी को महकते फूलों की माला पहनाई, फिर बैण्ड बाजों के साथ विदा किया। कई दिनों के सफर के उपरांत नीकू महात्मा धर्मा बन्दर के आश्रम में पहुंचे, धर्मा बन्दर प्रतिदिन उनको ज्ञान के नये–नये उपदेश देते। सांझ ढले आश्रम के बाहर आम के विशाल वृक्ष के नीचे दोनों दो घण्टे की कठोर तपस्या भी किया करते।

नीकू महात्मा को ज्ञान सीखाते व तपस्या ग्रहण करते पूरे दो वर्ष व्यतीत हो चुके थे। एक दिन नीकू महात्मा ने धर्मा बन्दर से कहा– 'मैने आपके सानिध्य में काफी ज्ञान ग्रहण कर लिया है व तपस्या भी की है, अब मैं आपसे आशीर्वाद लेकर अपने जंगल की ओर जाना चाहता हूं।' धर्मा ने आशीर्वाद देते हुए कहा–ठीक है, कल आप यहां से प्रस्थान कीजिए। आपके पहुंचने की खबर मैं आज रात को अपने शिष्य मुनमुन उल्लू के माध्यम से आपके जंगल के शासक के पास भिजवा दूंगा। सतरंगे जंगल के शासक को जैसे ही महात्मा नीकू के आगमन की खबर मिली तो उन्होंने पूरे जंगल में यह ऐलान

करवा दिया कि महात्मा नीकू तपस्या ग्रहण करके पधार रहे है, उनका भव्य स्वागत किया जाये। तकरीबन तीन हफ्ते उपरांत महात्मा नीकू ने जंगल के शासक से कहा–'राजा जी। आपके पुराने मंत्री कहां गए ? मुझे तो सारे मंत्रीगण नये–नये नजर आ रहे है ?'

इस पर जोनू ने कहा– 'मैने अपने तमाम पुराने वफादार मंत्रियों को बर्खास्त कर दिया है।' क्यों ?' महात्मा नीकू ने पूछा। जोनू बोला–दरअसल वे वफादार के नाम पर घोर कलंक थे, वे राजकाज के मामलों में बार–बार दखल दिया करते। यही नहीं वे मेरे बनाये गये कानूनों का मजाक भी उडाया करते। हर वक्त मेरी आलोचना करते रहते थे। भला ऐसे वफादार मंत्रियों को रखकर मैं क्या करता ? हां मैंने जो नये मंत्री नियुक्त किये है। वे हर मामले में मेरी खूब प्रशंसा करते है और बार बार मुझसे कहते है आप एक कुशल व बुद्धिमान शासक है।

यह सुनकर नीकू महात्मा ने गंभीर स्वर में कहा–'राजा जी। आपने यह ठीक नहीं किया वफादार वे नहीं, जो आपकी हर बात की ताली बजाकर तारीफ करे, बल्कि सच्चे वफादार तो वे ही हैं जो आपके दोषों को बताए। यह सुनकर जोनू को बोध हुआ– 'दरअसल सच्चे आलोचक ही सच्चे वफादार होते है।'

फिर जोनू ने अपने तमाम पुराने मंत्रियों को सम्मान के साथ पुनः बुलाया, उनसे क्षमा मांगी और कहा–'मैंने आप लोगों को गलत समझा था। हां आप लोग पुनः अपने पद पर कार्य कीजिए। जोनू ने अपने नये मंत्रियों को उनके पद से हटा दिया। अब नीकू महात्मा ने सूंड उठाकर अपनी विशाल कुटिया की तरफ जाते हुए कहा, याद रखो– जीवन के सफर में सच्चे आलोचक ही सच्चे वफादार होते है।

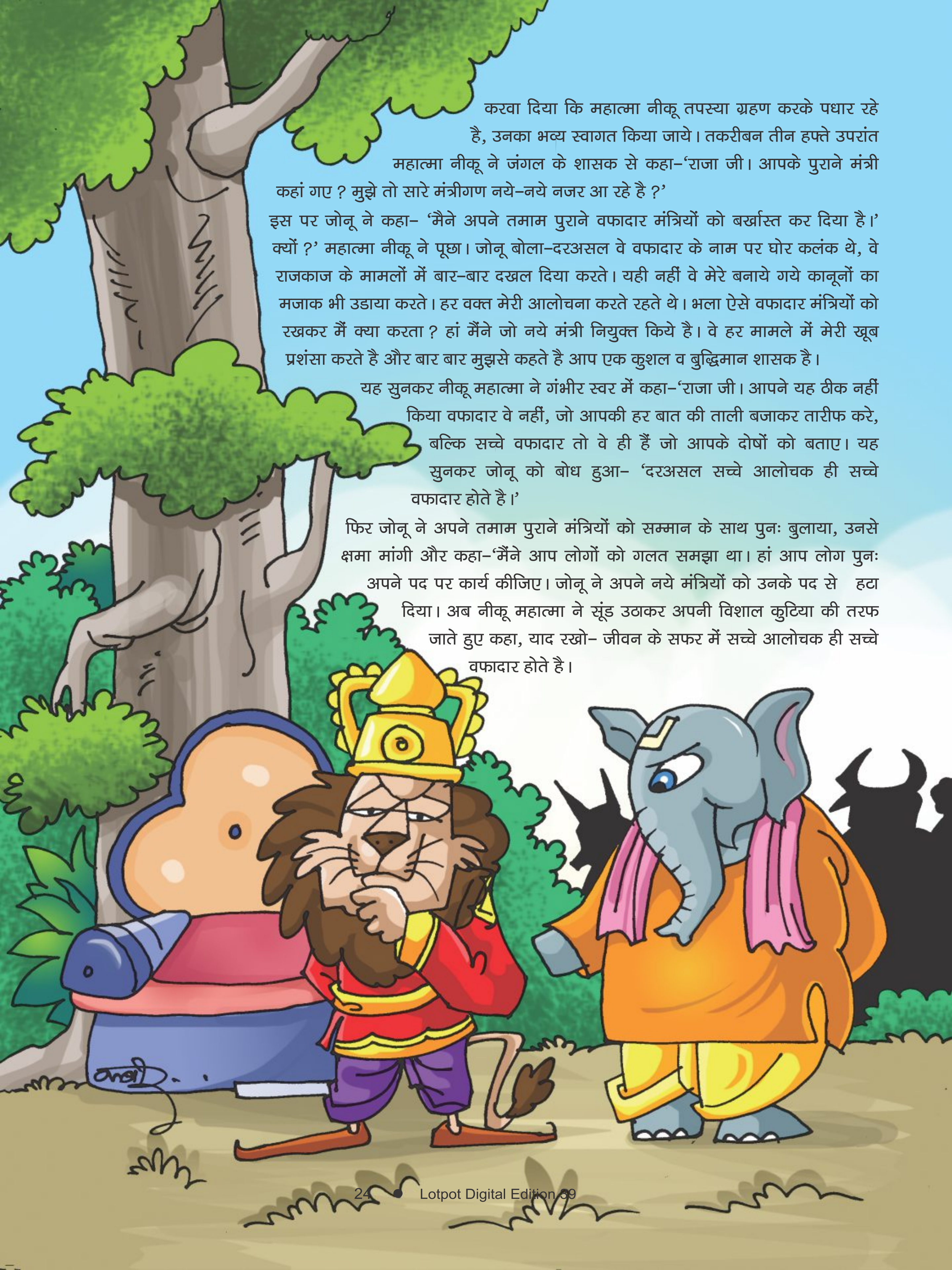

मोटू
पतलू
घसीटा
झटका

मोटू, पतलू, घसीटा एवं डा. झटका कॉपी राईट एक्ट व ट्रेडमार्क के अन्तर्गत लोटपोट के लिए रजिस्टर्ड हैं।

मोटू पतलू और

ईंधन बचाओ... देश बचाओ..

कथानक एवं चित्रांकन -हरविन्द्र मांकड़

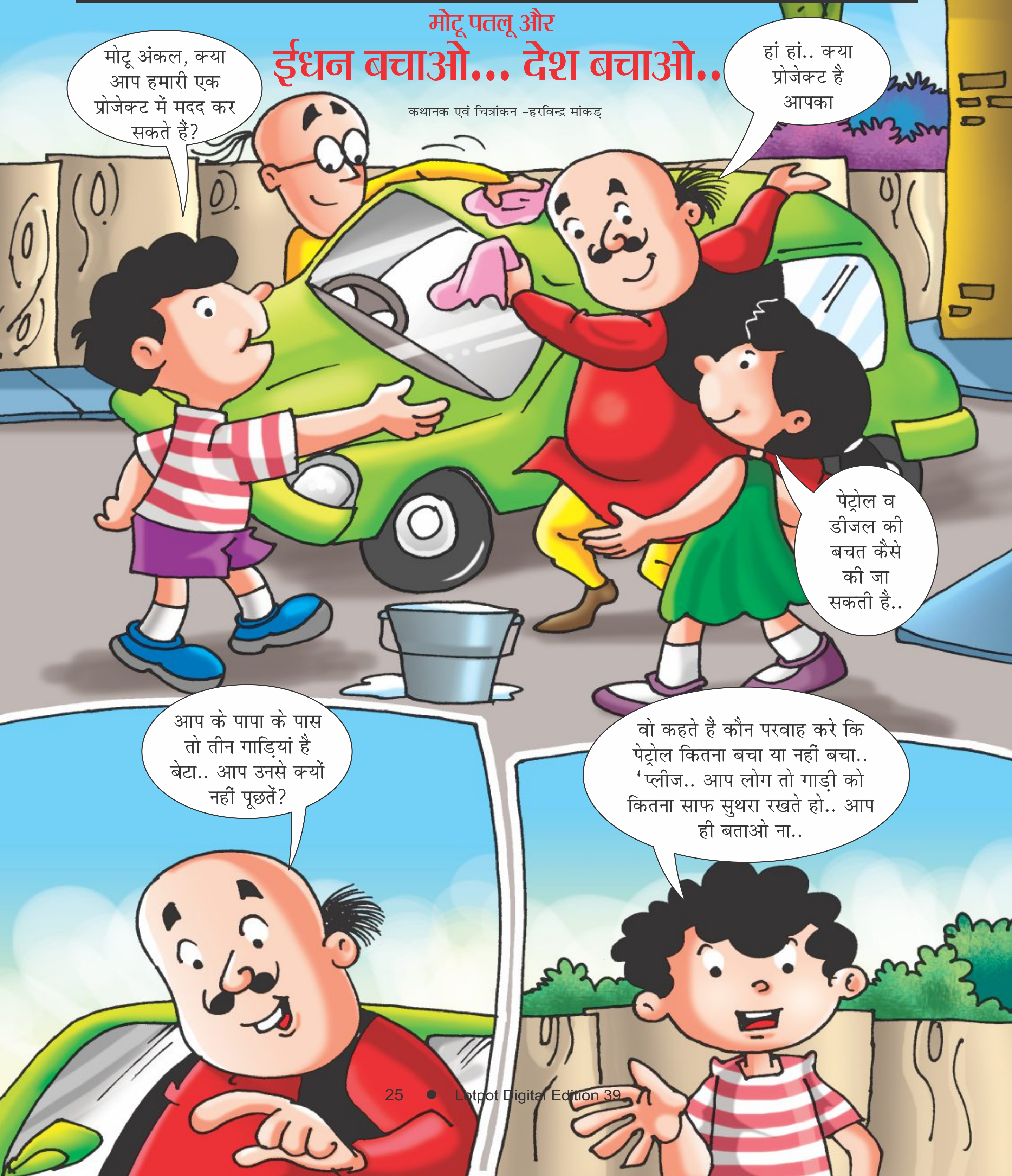
मोटू अंकल, क्या आप हमारी एक प्रोजेक्ट में मदद कर सकते हैं?
हां हां.. क्या प्रोजेक्ट है आपका
पेट्रोल व डीजल की बचत कैसे की जा सकती है..
आप के पापा के पास तो तीन गाड़ियां है बेटा.. आप उनसे क्यों नहीं पूछतें?
वो कहते हैं कौन परवाह करे कि पेट्रोल कितना बचा या नहीं बचा.. ‘प्लीज.. आप लोग तो गाड़ी को कितना साफ सुथरा रखते हो.. आप ही बताओ ना..

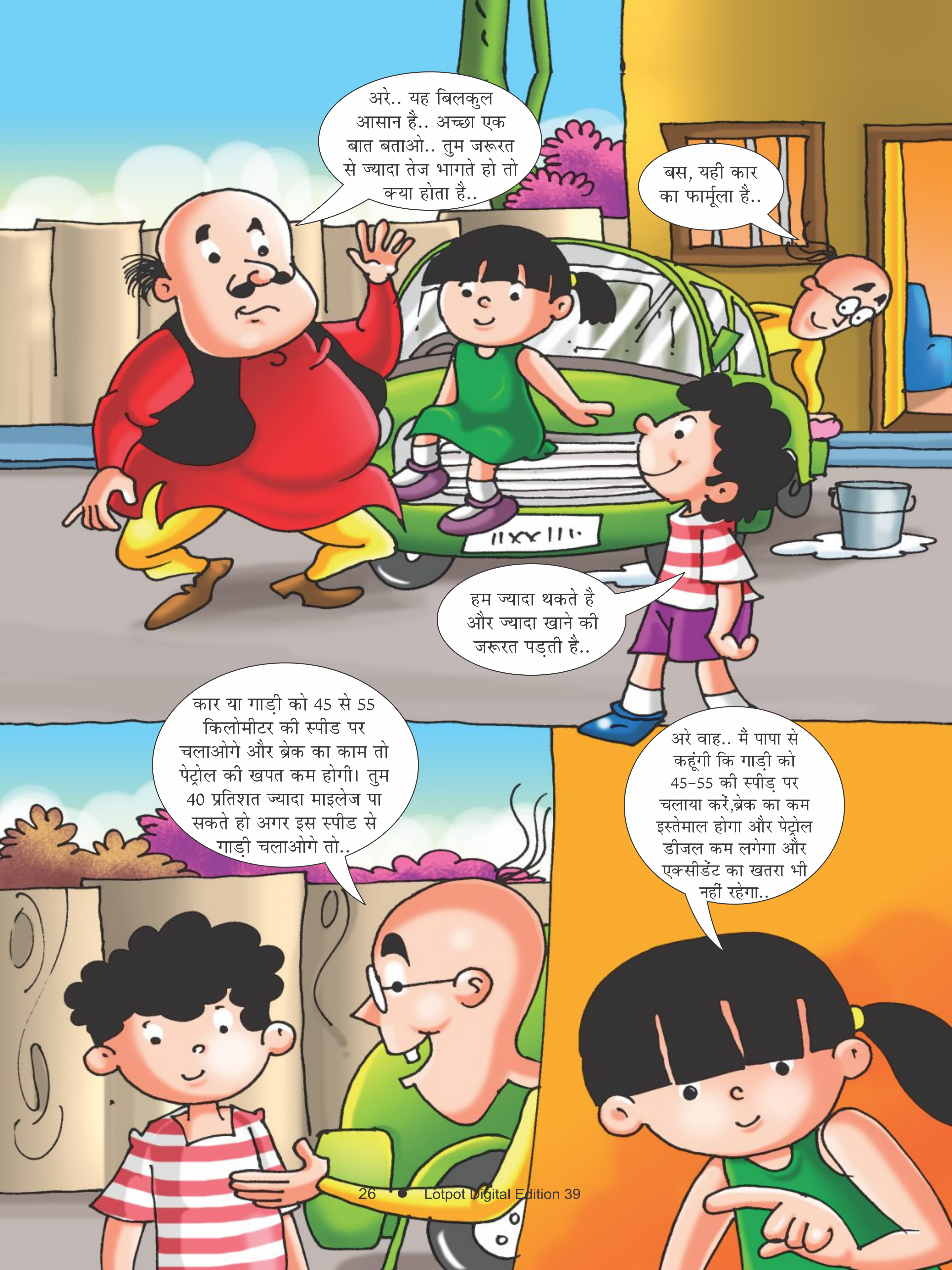
अरे.. यह बिलकुल आसान है.. अच्छा एक बात बताओ.. तुम जरूरत से ज्यादा तेज भागते हो तो क्या होता है..
बस, यही कार का फार्मूला है..
हम ज्यादा थकते है और ज्यादा खाने की जरूरत पड़ती है..
कार या गाड़ी को 45 से 55 किलोमीटर की स्पीड पर चलाओगे और ब्रेक का काम तो पेट्रोल की खपत कम होगी। तुम 40 प्रतिशत ज्यादा माइलेज पा सकते हो अगर इस स्पीड से गाड़ी चलाओगे तो..
अरे वाह.. मैं पापा से कहूंगी कि गाड़ी को 45-55 की स्पीड़ पर चलाया करें,ब्रेक का कम इस्तेमाल होगा और पेट्रोल डीजल कम लगेगा और एक्सीडेंट का खतरा भी नहीं रहेगा..

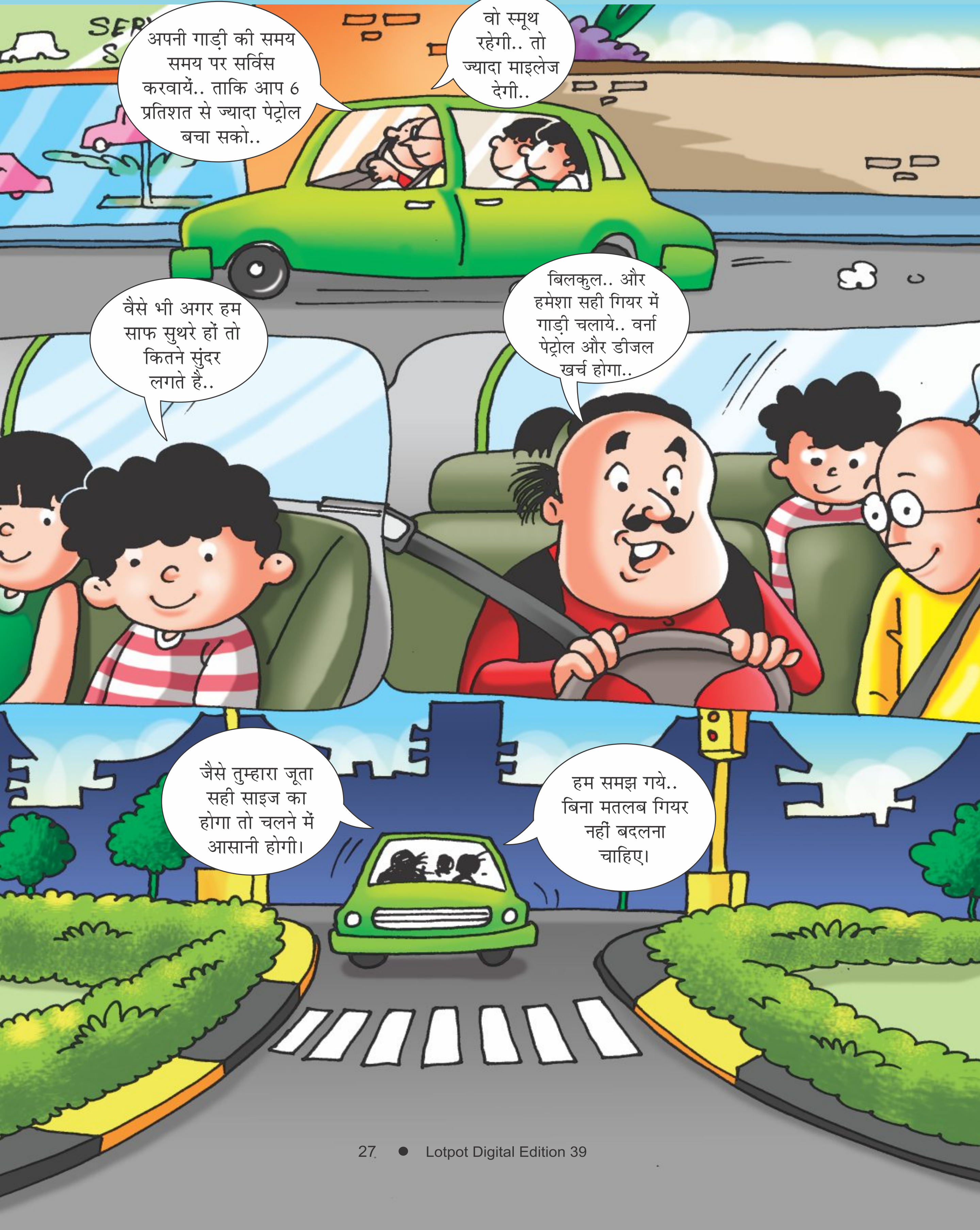
SER
S
अपनी गाड़ी की समय समय पर सर्विस करवायें.. ताकि आप 6 प्रतिशत से ज्यादा पेट्रोल बचा सको..
वो स्मूथ रहेगी.. तो ज्यादा माइलेज देगी..
वैसे भी अगर हम साफ सुथरे हों तो कितने सुंदर लगते है..
बिलकुल.. और हमेशा सही गियर में गाड़ी चलाये.. वर्ना पेट्रोल और डीजल खर्च होगा..
जैसे तुम्हारा जूता सही साइज का होगा तो चलने में आसानी होगी।
हम समझ गये.. बिना मतलब गियर नहीं बदलना चाहिए।

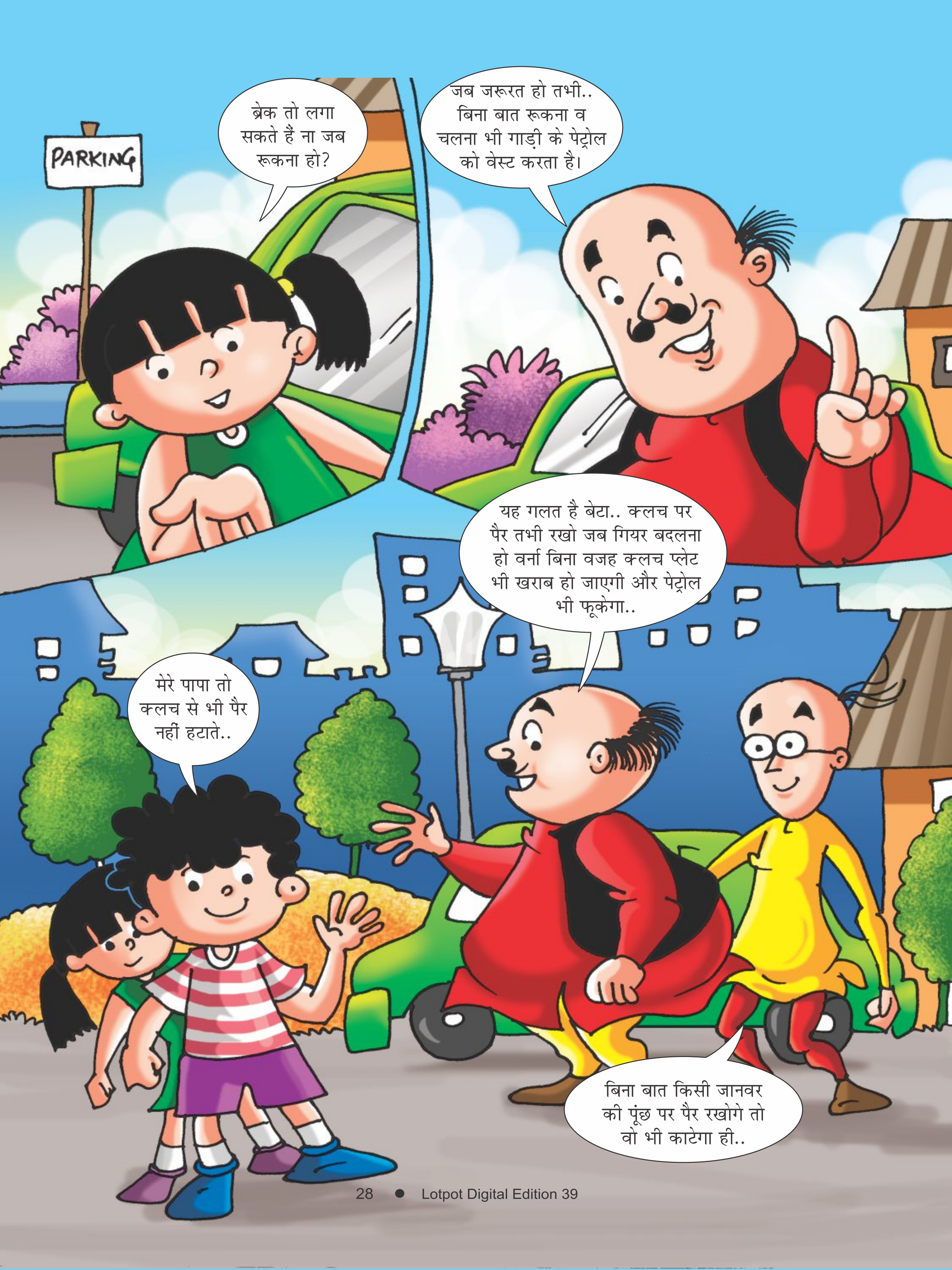
PARKING
ब्रेक तो लगा सकते हैं ना जब रूकना हो?
जब जरूरत हो तभी.. बिना बात रूकना व चलना भी गाड़ी के पेट्रोल को वेस्ट करता है।
मेरे पापा तो क्लच से भी पैर नहीं हटाते..
यह गलत है बेटा.. क्लच पर पैर तभी रखो जब गियर बदलना हो वर्ना बिना वजह क्लच प्लेट भी खराब हो जाएगी और पेट्रोल भी फूकेगा..
बिना बात किसी जानवर की पूंछ पर पैर रखोगे तो वो भी काटेगा ही..

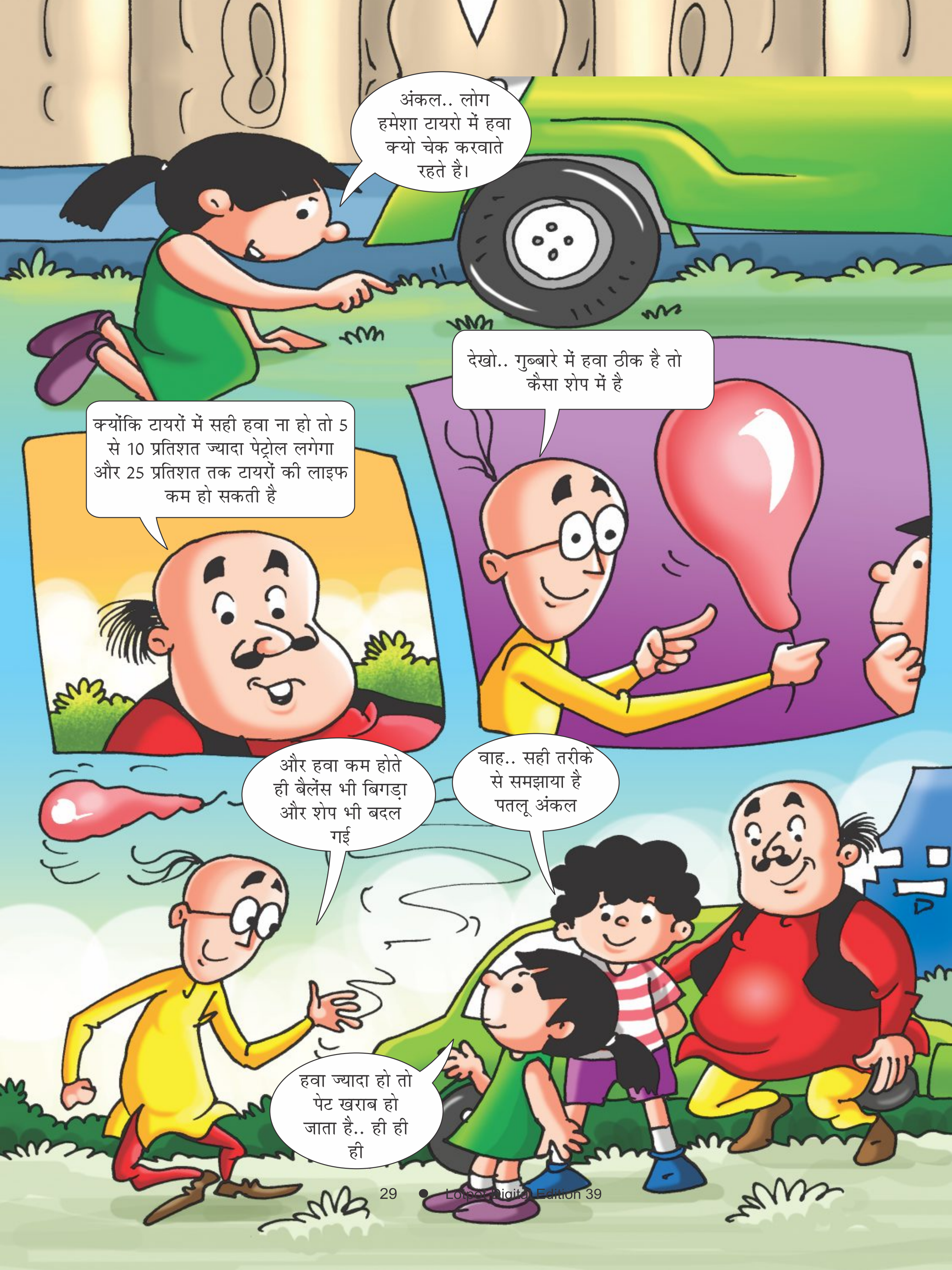
अंकल.. लोग हमेशा टायरो में हवा क्यो चेक करवाते रहते है।
क्योंकि टायरों में सही हवा ना हो तो 5 से 10 प्रतिशत ज्यादा पेट्रोल लगेगा और 25 प्रतिशत तक टायरों की लाइफ कम हो सकती है
देखो.. गुब्बारे में हवा ठीक है तो कैसा शेप में है
और हवा कम होते ही बैलेंस भी बिगड़ा और शेप भी बदल गई
वाह.. सही तरीके से समझाया है पतलू अंकल
हवा ज्यादा हो तो पेट खराब हो जाता है.. ही ही ही

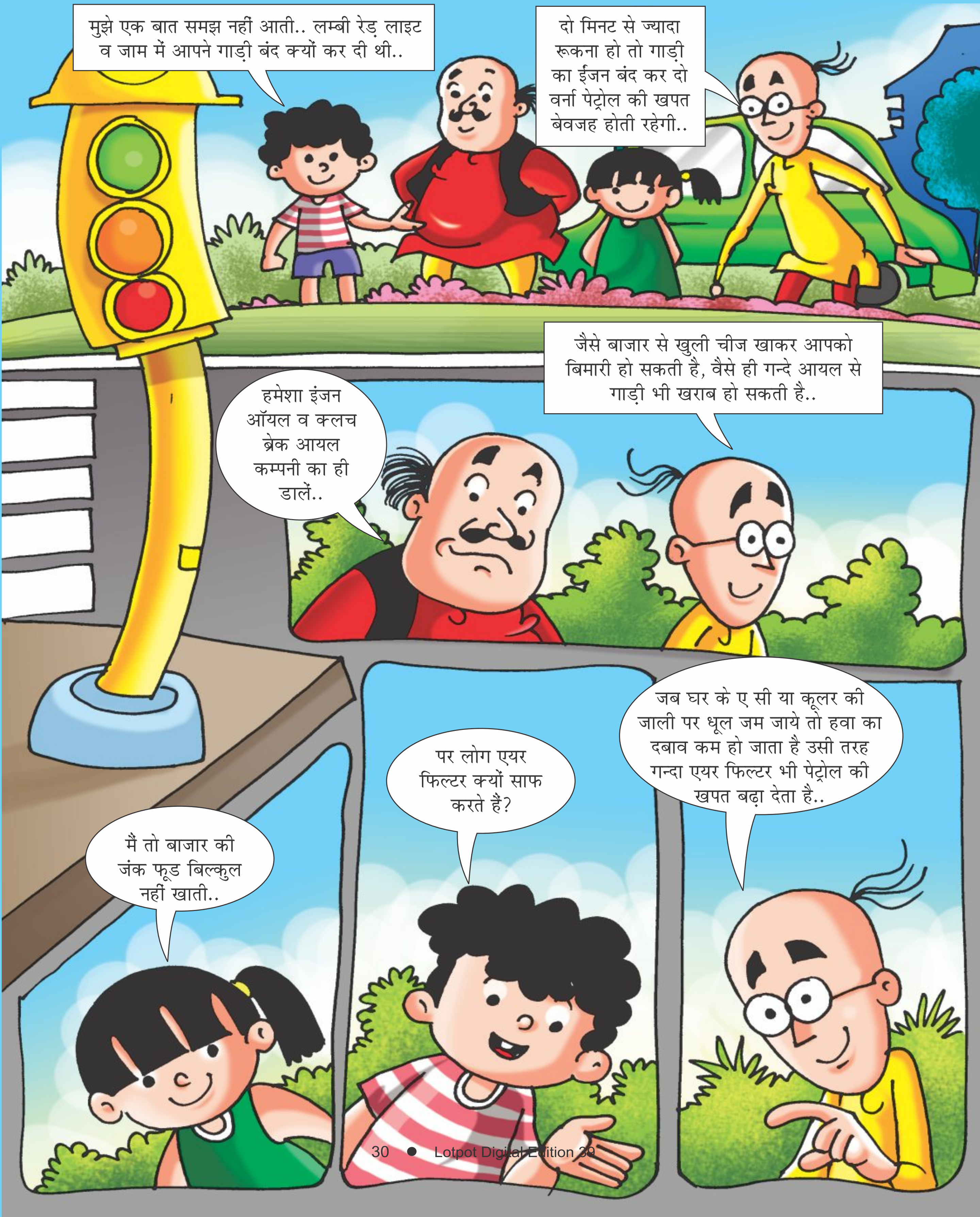
मुझे एक बात समझ नहीं आती.. लम्बी रेड़ लाइट व जाम में आपने गाड़ी बंद क्यों कर दी थी..
दो मिनट से ज्यादा रूकना हो तो गाड़ी का ईंजन बंद कर दो वर्ना पेट्रोल की खपत बेवजह होती रहेगी..
हमेशा इंजन ऑयल व क्लच ब्रेक आयल कम्पनी का ही डालें..
जैसे बाजार से खुली चीज खाकर आपको बिमारी हो सकती है, वैसे ही गन्दे आयल से गाड़ी भी खराब हो सकती है..
मैं तो बाजार की जंक फूड बिल्कुल नहीं खाती..
पर लोग एयर फिल्टर क्यों साफ करते हैं?
जब घर के ए सी या कूलर की जाली पर धूल जम जाये तो हवा का दबाव कम हो जाता है उसी तरह गन्दा एयर फिल्टर भी पेट्रोल की खपत बढ़ा देता है..

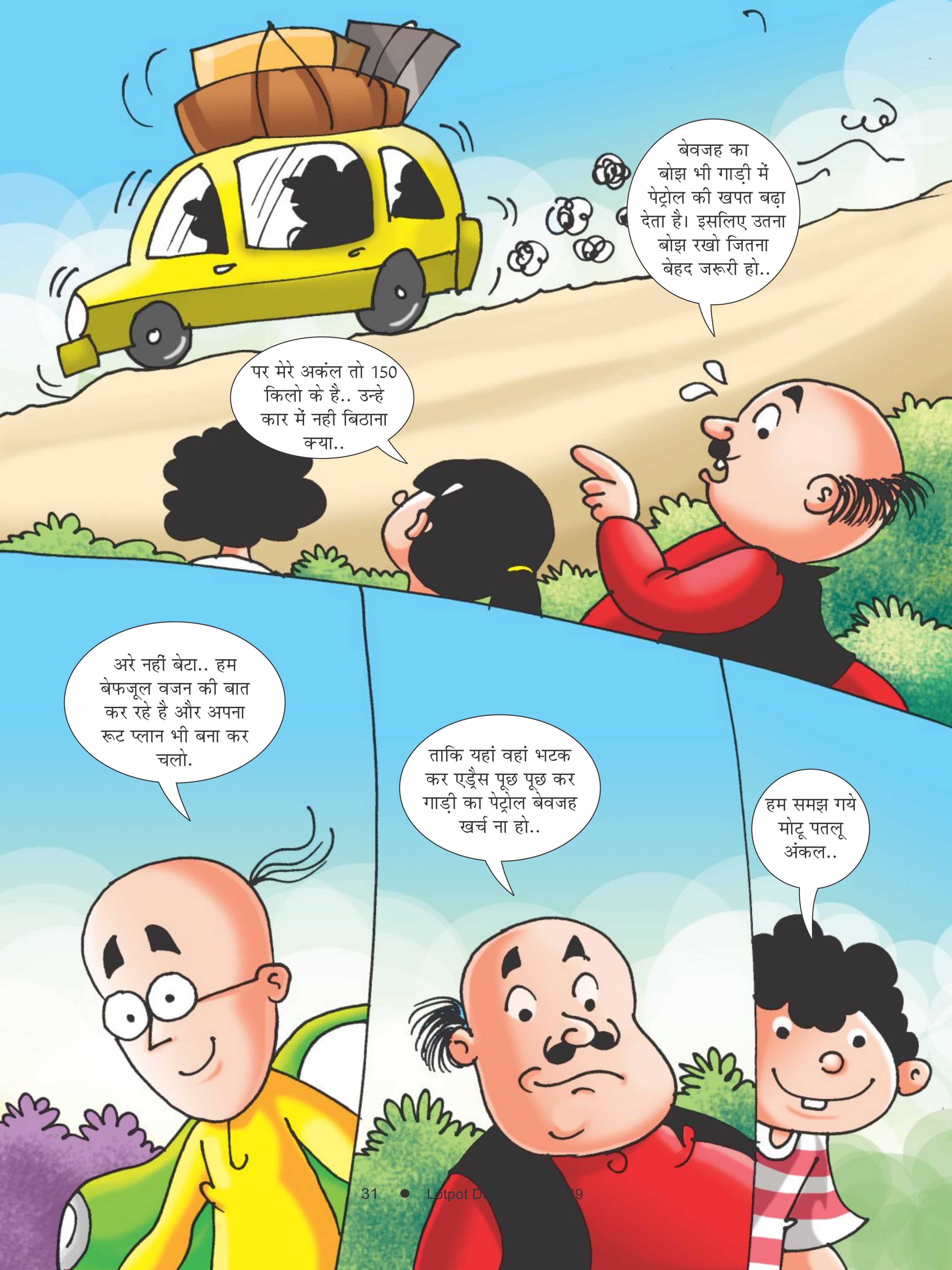
बेवजह का बोझ भी गाड़ी में पेट्रोल की खपत बढ़ा देता है। इसलिए उतना बोझ रखो जितना बेहद जरूरी हो..
पर मेरे अकंल तो 150 किलो के है.. उन्हे कार में नही बिठाना क्या..
अरे नहीं बेटा.. हम बेफजूल वजन की बात कर रहे है और अपना रूट प्लान भी बना कर चलो.
ताकि यहां वहां भटक कर एड्रैस पूछ पूछ कर गाड़ी का पेट्रोल बेवजह खर्च ना हो..
हम समझ गये मोटू पतलू अंकल..

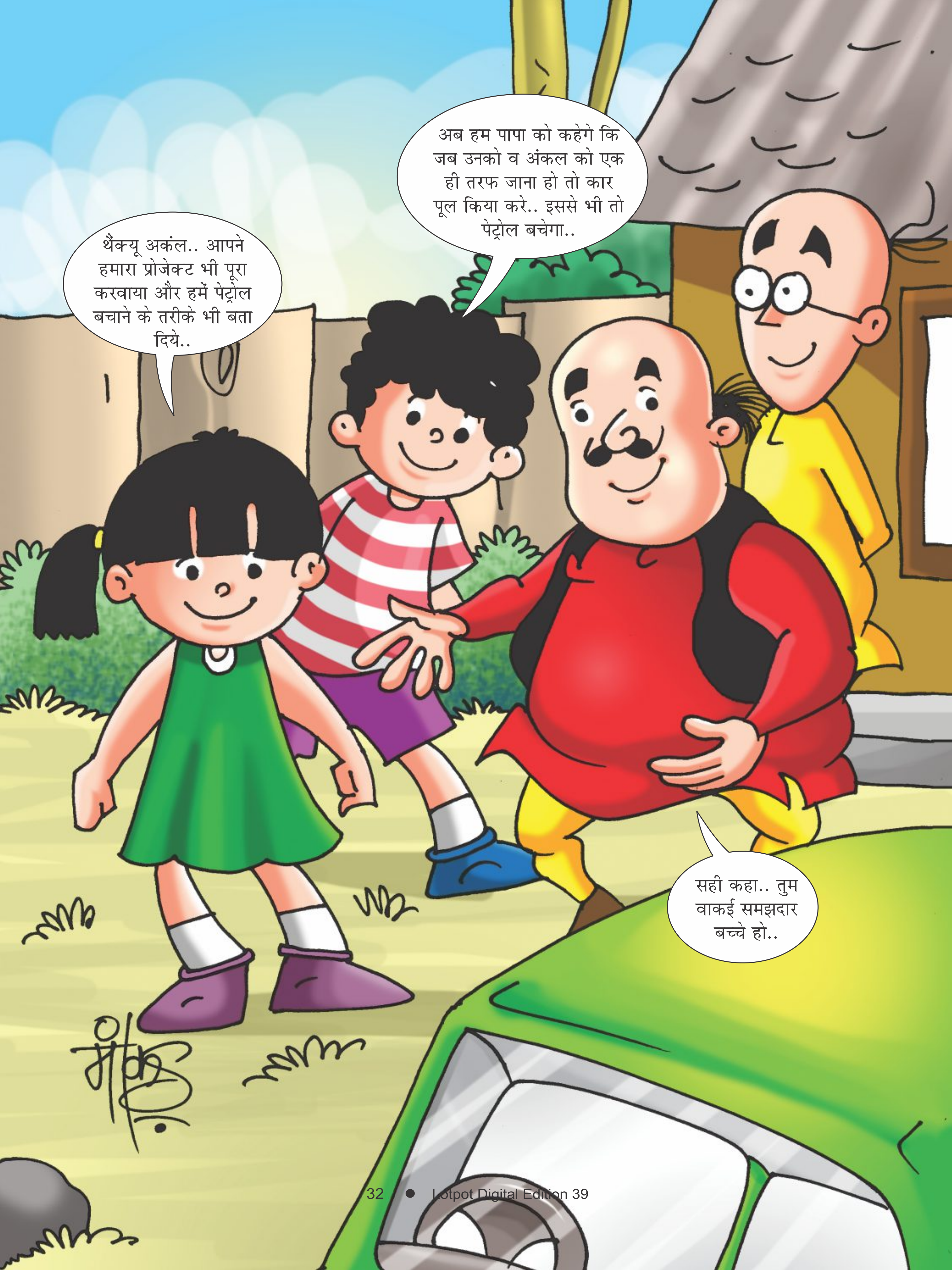
थैंक्यू अकंल.. आपने हमारा प्रोजेक्ट भी पूरा करवाया और हमें पेट्रोल बचाने के तरीके भी बता दिये..
अब हम पापा को कहेगे कि जब उनको व अंकल को एक ही तरफ जाना हो तो कार पूल किया करे.. इससे भी तो पेट्रोल बचेगा..
सही कहा.. तुम वाकई समझदार बच्चे हो..

यात्रा

डेथ वैली

दोस्तों, आओ तुम्हें डेथ वैली के बारे में जानकारी देते हैं। डेथ वैली उत्तरी अमेरिका का एक बहुत ही विचित्र स्थान है। यह कैलिफोर्निया के दक्षिण पूर्व में नेवडा की सीमा के पास है। इसकी लंबाई 225 किमी. है। अलग-अलग स्थानों पर इसकी चौड़ाई अलग-अलग है और यह 8 से 24 किमी के बीच में है। डेथ वैली उत्तरी अमेरिका का सबसे गर्म और सूखा स्थान है। इसकी तली सबसे नीची है। तली का सबसे नीचा स्थान समुद्र तल से 86 मीटर नीचे है। इस वैली का तापमान 49 सेंटीग्रेड तक पहुँच जाता है। यहाँ वर्षा नाम मात्र होती है। साल में औसत वर्षा केवल 5 सेमी. के लगभग होती है। यहाँ पानी का निशान तक नहीं है। यदि कहीं-कहीं पानी है भी तो बहुत खारा। इन भयानक परिस्थितियों के कारण ही इस घाटी का नाम 'डेथ वैली' यानी 'मौत की घाटी' पड़ गया। 1870 में जब घाटी का अध्ययन किया गया तो इसमें हज़ारों जानवरों और मनुष्यों की हड्डियों के ढांचे मिले। सन् 1933 में इस वैली को अमेरिका का नेशनल मान्यूमेंट घोषित कर दिया गया। इसकी विचित्रता को देखने हर वर्ष चार-पाँच लाख लोग यहाँ जाते हैं। यह सारी घाटी ही रेगिस्तान है, लेकिन फिर भी यहाँ खरगोश, गिलहरी, कंगारू, चूहे आदि बहुत से जानवर मिलते हैं। यहाँ पर 78 प्रकार के पक्षी भी मौजूद हैं।

मेहनत की कमाई में ही सुख है..

पुरानी बात है। सुन्दरनगर नाम का एक गांव था वहां के अधिकतर लोग खेती बाड़ी करते थे। स्त्री–पुरूष सभी बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति के थे। आपस में मिलजुल कर और बड़े प्रेम भाव से रहते थे। एक दूसरे के दुख–सुख में हाथ बंटाते थे। एक बार पृथ्वी पर लक्ष्मी आई उन्होंने सुन्दरनगर वासियों को अपने पास बुलाया और अपना परिचय देते हुए कहा–मैं लक्ष्मी हूं। यहां के वासियों को मैं उनकी इच्छा के अनुसार वरदान देने आई हूं। तुम लोगों में से जो भी कुछ मांगना चाहे वह आकर मुझसे मांग ले। पूर्णिमा की संध्या को मैं लक्ष्मी मंदिर में आऊंगी, सब वहीं पर इक्ट्ठे हो जाना'

किसानों के पुत्रों को, जो खेती बाड़ी करके फसल उपजाने के लिए अपने पसीना बहाते थे, लक्ष्मी जी द्वारा ऐसा सरल उपाय सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई और वे वरदान प्राप्त करने वाले दिन की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगे। धरती मां युवकों में काम करने भी लगन और उत्साह को ठंड़ा पड़ता हुआ देखकर विचलित हो उठी। उन्होंने समस्त कृषक पुत्रों को बुलाया और बड़े स्नेह से समझाया, कहा पुत्रों! तुम मुफ्त की दौलत प्राप्त करने के चक्कर में मत पड़ो परिश्रम करते रहो, क्योंकि श्रम् बिना न कि अपि साध्यम् अर्थात बिना मेहनत किये मनुष्य को कुछ नहीं मिलता। तुम कर्म करते जाओ, मैं तुम्हे किसी भी तरह का अभाव नहीं रहने दूंगी।'

धरती मां के परामर्श पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। सभी बिना कष्ट के लक्ष्मी का वरदान पाकर

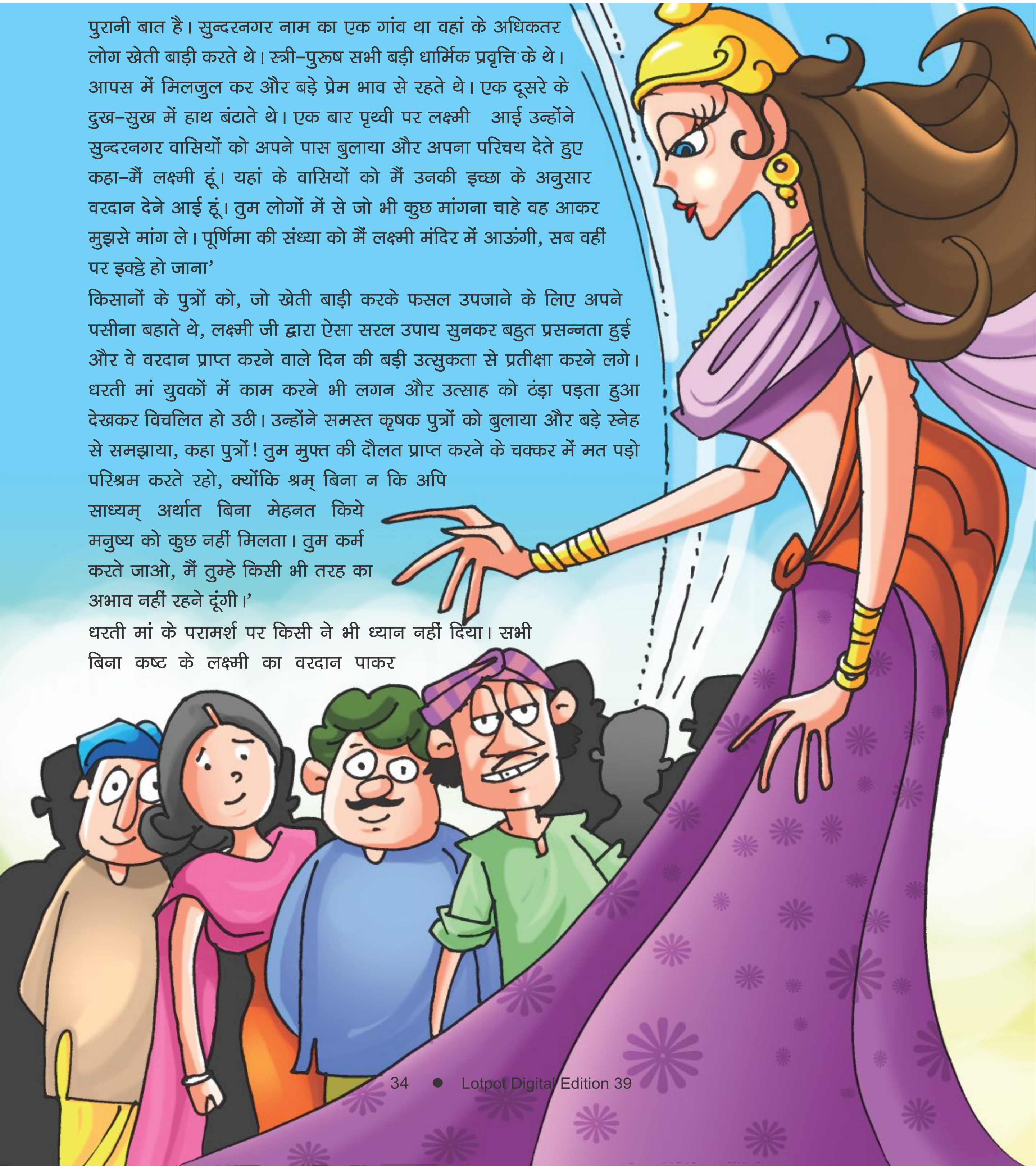

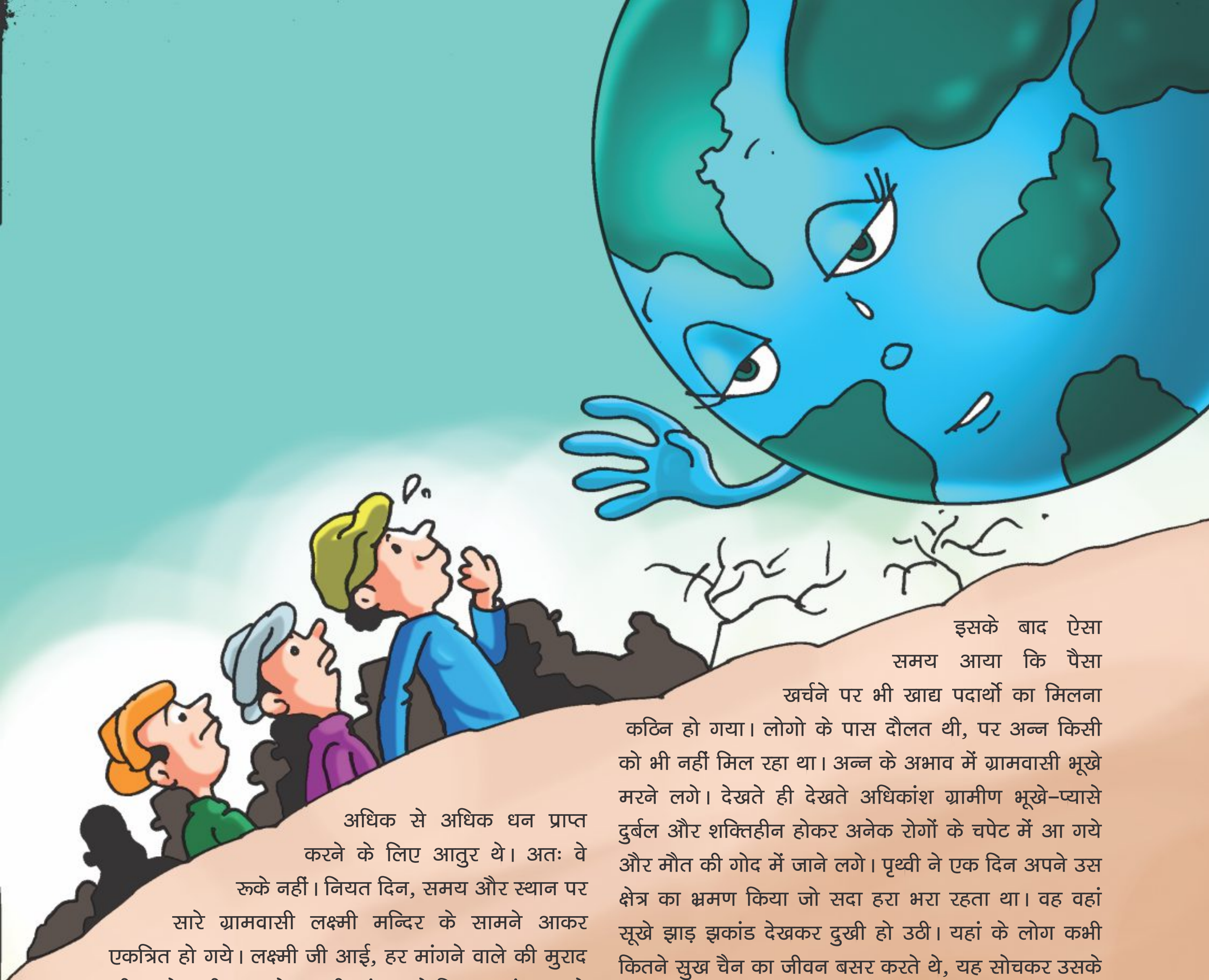

अधिक से अधिक धन प्राप्त करने के लिए आतुर थे। अतः वे रुके नहीं। नियत दिन, समय और स्थान पर सारे ग्रामवासी लक्ष्मी मन्दिर के सामने आकर एकत्रित हो गये। लक्ष्मी जी आई, हर मांगने वाले की मुराद पूरी करने लगी। सब ने धन ही मांगा, जो जितना मांगता उसे उतना ही मिल जाता। लोगों के घरों में सोने-चांदी और हीरे जवाहरात के ढेर लग गये। लक्ष्मी लोगों की अभिलाषा पूरी करके स्वर्ग लौट गई। अपार धन पाकर लोग फूले नहीं समाये। परन्तु बिना परिश्रम का धन मनुष्य को नकारा तो बनाता ही है। अधिक दिन फलता भी नहीं, मुफ्त के धन का लोग खुले हाथों से उपयोग करने लगे और अनेक बुरे कामों मे उपयोग करने लगे और अनेक बुरे कामों में फंस गये। और विलासी जीवन जीने लगे। शक्ति क्षीण हो गई। धन की कोई कमी न रहने के कारण खेती-बाड़ी करना तो उन्होंने कभी का छोड़ दिया था अब द्वार पर बंधे हुए ढोर गाय, भैंस-बैंल सभी बेच दिये। सभी को अपने व्यवसाय से अरुचि सी हो गई थी।

एकत्रित किया हुआ अन्न भंडार कब तक चलता? गोदाम खाली होने लगे। महंगाई बढ़ने लगी। कुछ ही दिनों में ऐसी स्थिति आ गई कि चीजों के दाम चरम सीमा पर पहुंच गये। इसके बाद ऐसा समय आया कि पैसा खर्चने पर भी खाद्य पदार्थो का मिलना कठिन हो गया। लोगो के पास दौलत थी, पर अन्न किसी को भी नहीं मिल रहा था। अन्न के अभाव में ग्रामवासी भूखे मरने लगे। देखते ही देखते अधिकांश ग्रामीण भूखे-प्यासे दुर्बल और शक्तिहीन होकर अनेक रोगों के चपेट में आ गये और मौत की गोद में जाने लगे। पृथ्वी ने एक दिन अपने उस क्षेत्र का भ्रमण किया जो सदा हरा भरा रहता था। वह वहां सूखे झाड़ झकांड देखकर दुखी हो उठी। यहां के लोग कभी कितने सुख चैन का जीवन बसर करते थे, यह सोचकर उसके नैन भर आए। छोटी सी आबादी वाले गांव में केवल मुट्ठी भर जन जीवन शेष रह गया था। गांव श्मशान जैसा हो गया था। धरती मैया यह दृश्य देखकर लक्ष्मी को कोसने लगी। दुखी धरती मां ने अपने पुत्रों को एक बार फिर ललकारा और सचेत करते हुए कहा- 'पुत्रों! अभी भी समय है, चले जाओं अपने फावड़े और खेतों पर चलो। अपने परिश्रम से कमाई हुई दौलत में ही सच्चा सुख और आनन्द है। कुछ दिन जंगल से कन्द मूल खाकर जीवन रक्षा करो। कुछ ही समय में फिर अच्छे लोग आएंगे। धरती मां के आहवान से किसानों की आंखे खुल गई। उन्हें अब आभास हो रहा था। कि सचमुच अपने श्रम के बिना कमाया धन सुख शान्ति और खुश हाली नहीं देता।

अगले दिन नर नारी हाथों में फावड़े कुदाल लिए हुए अपने अपने खेंतों की ओर बढ़ रहे थे।

क्राफ्ट टाईम

बन्नी खरगोश

सामग्री–
खाली गत्ते के डिब्बे, रंगीन कागज़, कार्ड, फेवीकोल, पेन, कैंची शावर

दोस्तो, अगर आप अपने आसपास अलग–अलग आकार के गत्ते के डिब्बे पड़े देखे तो आप इनको इक्ट्ठा करके अपने टेबल के लिए मज़ेदार चीज़ बना सकते है।

विधि–

1. सबसे बड़ा गत्ते का डिब्बा ले और इसको रंगीन कागज़ से ढक ले। अब चार एक ही साइज़ के गत्ते के डिब्बे ले।

2. इनको अलग अलग रंग के कागज़ से ढक ले।

3. फेवीकोल की मदद से बड़े गत्ते के डिब्बे पर छोटे गत्ते के डिब्बे चिपकाए।

4. अब कार्ड पर बन्नी खरगोश के कान बनाकर काट ले। कानों के दोनों तरफ अलग रंगीन कागज़ लगाए।

5. अब कानों को बड़े गत्ते के डिब्बे के पीछे लगा दे। मार्किंग पेन की मदद से उसकी आँखें, नाक, मुँह और मूछें बनाए।

6. अब आपका बन्नी खरगोश आपके टेबल के लिए तैयार है। आप इसको पिन लगाने के लिए, क्लिप लगाने के लिए और पेंसिल, पेन लगाने के लिए इस्तेमाल कर सकते है।?

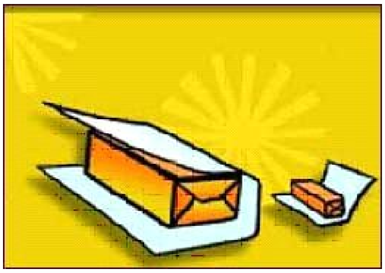

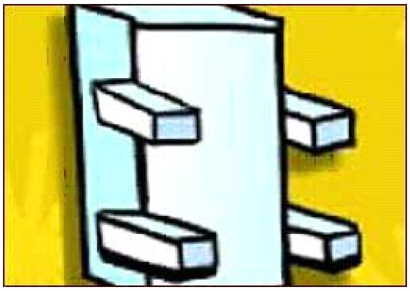

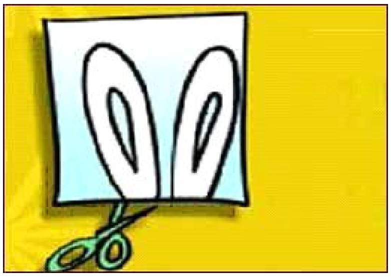

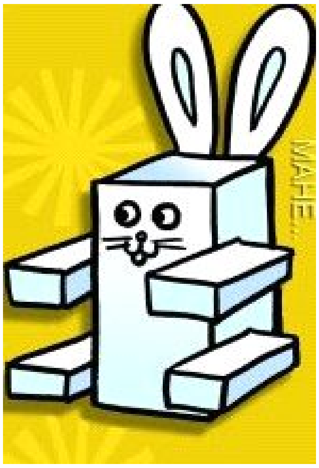

उड़ने की चाह

चंपक वन में एक तालाब था वहां खूब हरियाली थी उस तालाब के पास कछुए का भी एक परिवार रहता था। कछुआ उस परिवार में सबसे छोटा था। छोटा होने के कारण उसकी हर फरमाइश पूरी की जाती, इसलिए वह जिद्दी हो गया था। एक दिन वह तालाब के किनारे घूम रहा था। तभी उसे एक चील आकाश में उड़ती हुई दिखाई पड़ी। कछुआ सोचने लगा ‘काश, उसके पास भी पंख होते और वह भी चील की तरह आकाश में उड़ सकता।’

अब तक चील जमीन पर उतर चुकी थी। वह तालाब के किनारे अपने शिकार को बड़े मजे के साथ खा रही थी। कछुआ उसके पास पहुंचा। चील अपने भोजन का आनंद ले रही थी, इसलिए उसका ध्यान कछुए की ओर नहीं गया। कछुएं ने अपनी आवाज साफ करते हुए कहा, ‘क्या तुम मेरे दोस्त बनना चाहोगे ?’

चील ने अपनी गर्दन उठाई। कछुए को देखकर बोली, ‘जरूर मेरा यहां कोई नहीं है। तुम चाहो तो हम दोनों पक्के दोस्त बन सकते है।’ दोनों दोस्त बन गए। चील कछुए के परिवार की एक सदस्य सी बन गई। एक बार कछुएं ने उस से पूछा, ‘तुम उड़ते कैसे हो ?’ चील ने बताया, ‘जैसे तुम्हारे चार पैर है वैसे ही हमारे ये पंख है। इसे जोर–जोर से हिला कर हम आसमान में उड़ते है।’

‘तुम्हारे कितने मजे है दूर–दूर तक उड़ सकते हो और एक मैं हूं, जिसकी किस्मत में सिर्फ इसी तालाब में रहना लिखा है काश मैं भी तुम्हारी तरह उड़ सकता।’ उदास होकर कछुआ बोला। ‘अरे, दोस्त मायूस न हो। प्रकृति ने हम सब को अलग–अलग बनाया है। तुम चल सकते हो, तैर सकते हो, परन्तु हम तो केवल उड़ना जानते है, तुम्हारी तरह तैर थोड़े

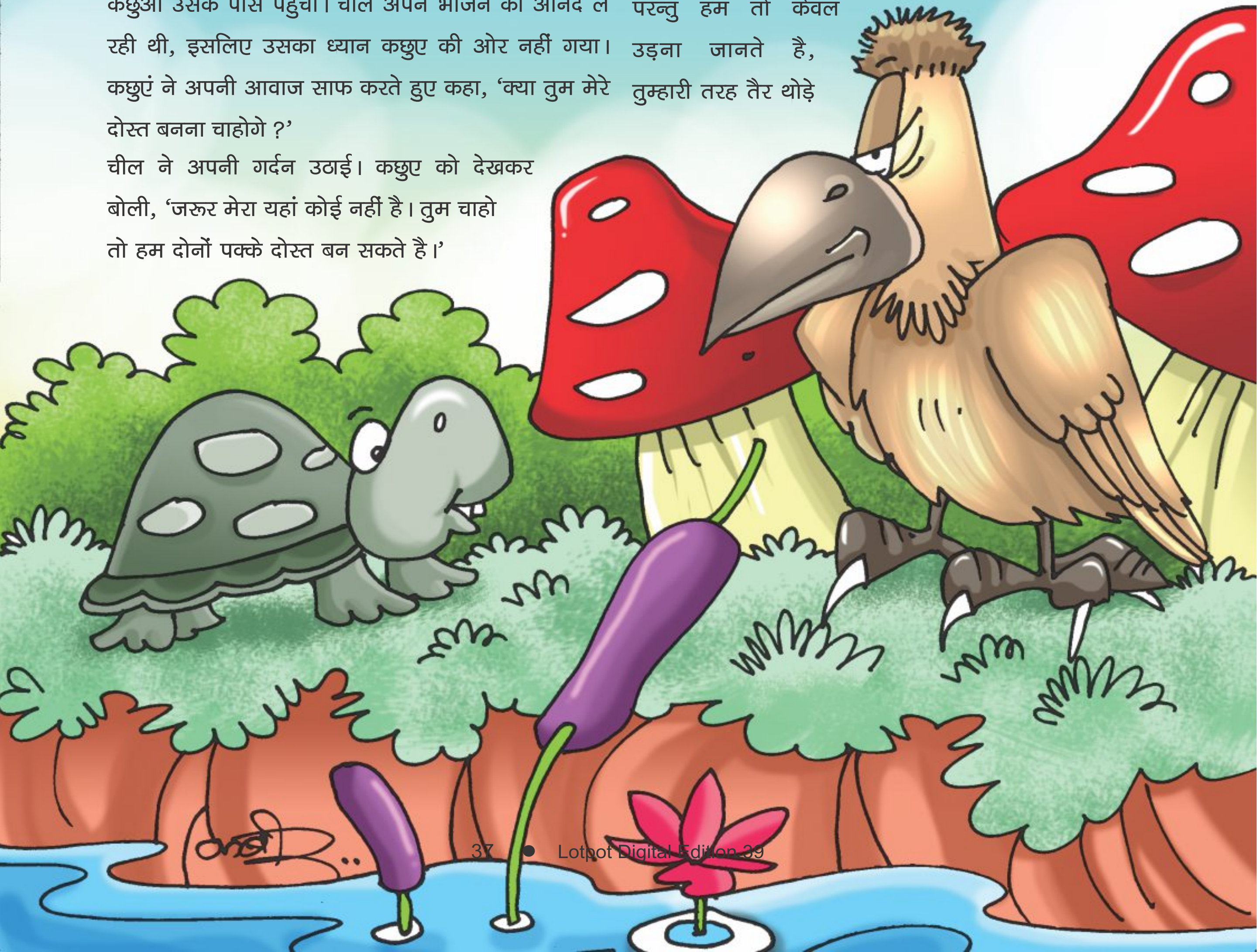

ही सकते है' चील ने उसे दिलासा दिलाई।

'मैं भी उड़ना चाहता हूं मुझे एक बार तुम आकाश में ले चलो फिर हवा में छोड़ देना। मै अपने पैरों को खूब जोर से हिलाऊंगा, हो सकता है कि मै भी तुम्हारी तरह उड़ना सीख जाऊं' बहुत विश्वास के साथ कछुआ बोला।

चील परेशान हो गई। उसने कछुए को समझाया, 'दोस्त, यदि तुम आसमान से नीचे जमीन पर गिरे तो तुम्हारे टुकड़े हो जाएंगे।' 'मैं सब समझ गया। तुम्हें ईर्ष्या हो रही है। यदि मैं भी तुम्हारी तरह उड़ने लगा तो तुम्हारा महत्व कम हो जाएगा इसलिए तुम ऐसा कह रहे हो।' आंखे लाल करता हुआ कछुआ बोला।

चील ने उसे लाख समझाने की चेष्टा की, परन्तु कछुए पर कोई असर नहीं हुआ। कछुए ने स्पष्ट रूप से कह दिया कि यदि वह उसे आसमान में न ले गया तो दोनों की दोस्ती टूट जायेगी।

काफी सोचने के बाद चील ने कहा, 'ठीक है, मैं तुम्हें आकाश में ले जा कर छोड़ दूंगा फिर तुम उड़ने की कोशिश करना परन्तु इसके बाद कभी उड़ने का नाम न लेना।'

कछुआ मान गया।

तय हुआ कि चील उसे अपने पंजो में जकड़ लेगी और ऊंचाई पर जा कर अपनी पकड़ ढीली कर देगी जिससे कि उसका दोस्त उड़ सके। चील उसे लेकर आसमान में उड़ चली। इतनी ऊंचाई पर पहुंच कर कछुए को डर लग रहा था। उधर चील जानती थी कि यदि उसका दोस्त इतनी ऊंचाई से नीचे गिरा तो उसके टुकड़े हो जायेगे। इसलिए वह तालाब की ओर उड़ी। अब वह ठीक तालाब के ऊपर उड़ रही थी। कछुएं को इशारा कर, उसने अपनी पकड़ ढीली कर दी।

चील के पंजो से छूटते ही कछुआ अपनी टांगे जोर-जोर से हिलाने लगा जिससे कि वह उड़ सके। परन्तु यह क्या ? वह उड़ने की बजाय नीचे गिरता जा रहा था 'छपाक' वह सीधा जाकर तालाब में गिरा। कछुआ तैर कर किनारे पहुंचा वहां चील उसका इंतजार कर रही थी।

'क्यों दोस्त उड़ना सीख गए ?' चील ने हंसते हुए पूछा.. झेंपते हुए कछुआ बोला, 'मुझे माफ कर दो, दोस्त, मेरी जिद के कारण तुम्हे भी परेशानी उठानी पड़ी। तुम्हारे कारण ही इतनी ऊंचाई से गिरने के बाद भी मैं आज जीवित हूं।' मैं आज के बाद कभी जिद नहीं करूंगा। हम हमेशा अच्छे दोस्त बने रहेंगे। दोनों दोस्त प्यार से गले मिले। उनकी आंखों में खुशी के आंसू थे।

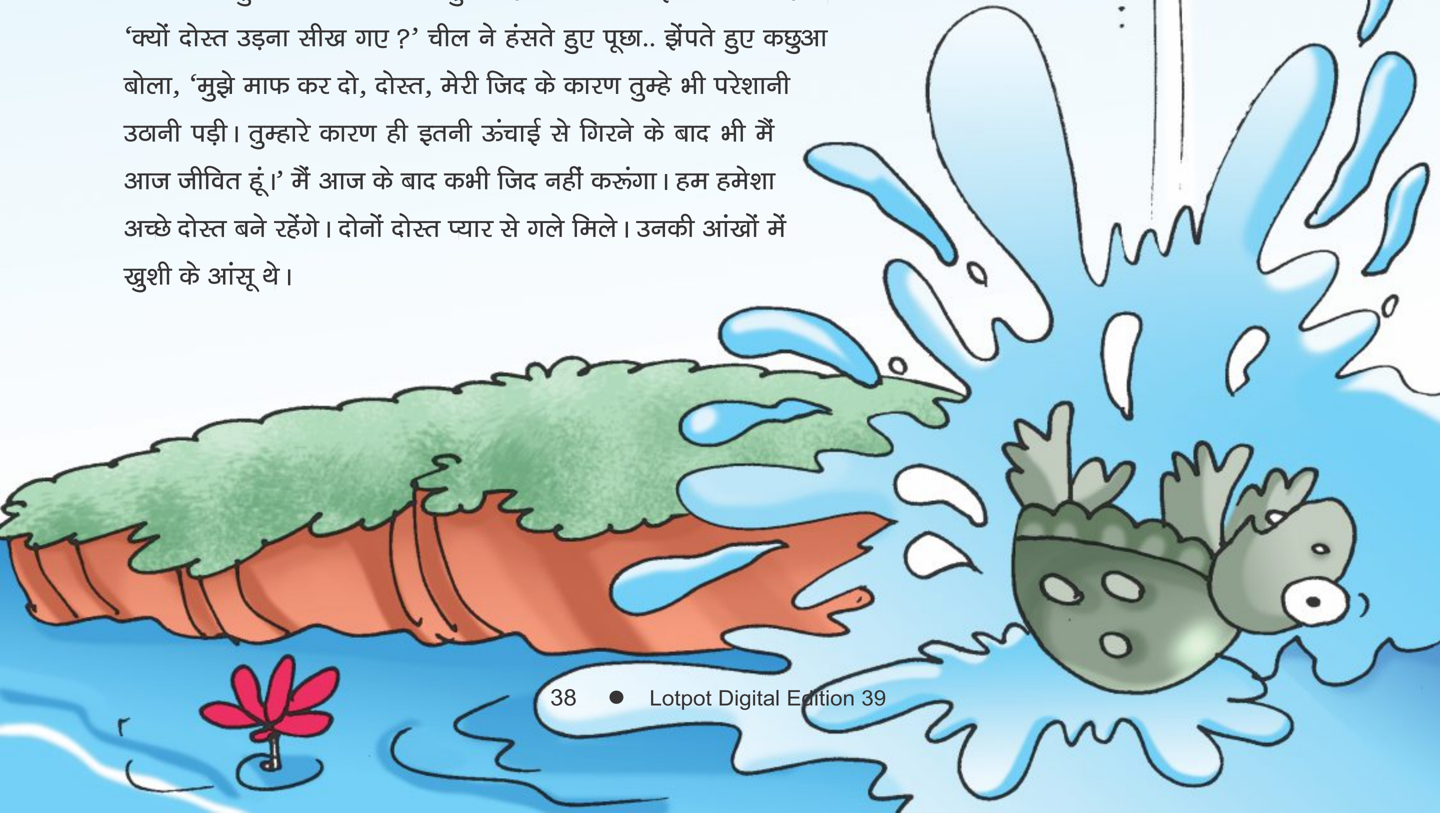

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा सी.एम.एस. छात्रा इक्कीस हजार रूपये (रु. 21,000) के नगद पुरस्कार से सम्मानित

सटी मोन्टेसरी स्कूल, कानपुर रोड कैम्पस की छात्रा कुमारी नैन्सी को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा इक्कीस हजार रूपये (रु. 21,000) के नगद पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। नैन्सी को यह पुरस्कार अन्तर-विद्यालयी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु प्रदान किया गया है। उक्त जानकारी सी.एम.एस. के मुख्य जन-सम्पर्क अधिकारी श्री हरि ओम शर्मा ने दी है।

श्री शर्मा ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विधान भवन, लखनऊ में आयोजित एक भव्य समारोह में नैन्सी को प्रशस्ति पत्र एवं इक्कीस हजार रूपये (रु. 21,000) के नगद पुरस्कार से पुरष्कृत कर सम्मानित किया। इस अवसर पर प्रदेश के कानून मंत्री श्री बृजेश पाठक, नगर विकास मंत्री श्री आशुतोष टंडन, सी.एम.एस. संस्थापक डा. जगदीश गाँधी व डा. भारती गाँधी, सी.एम.एस. कानपुर रोड कैम्पस की प्रधानाचार्या डा. विनीता कामरान समेत कई गणमान्य हस्तियों ने उपस्थित होकर नैन्सी को अपना आशीर्वाद दिया।

श्री शर्मा ने बताया कि इस अन्तर-विद्यालयी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में लखनऊ के विभिन्न प्रतिष्ठित विद्यालयों के छात्रों ने प्रतिभाग किया। कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच सी.एम.एस. की इस प्रतिभाशाली छात्रा ने देश प्रेम संदेश देते हुए रचनात्मक व सारगर्भित लेखन की छाप छोड़ी। निर्णायक मंडल ने एकता, शान्ति व सौहार्द की भावना से ओतप्रोत कुमारी नैन्सी के लेखन की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए द्वितीय पुरस्कार हेतु चयनित किया।

(हरि ओम शर्मा)
मुख्य जन-सम्पर्क अधिकारी
सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

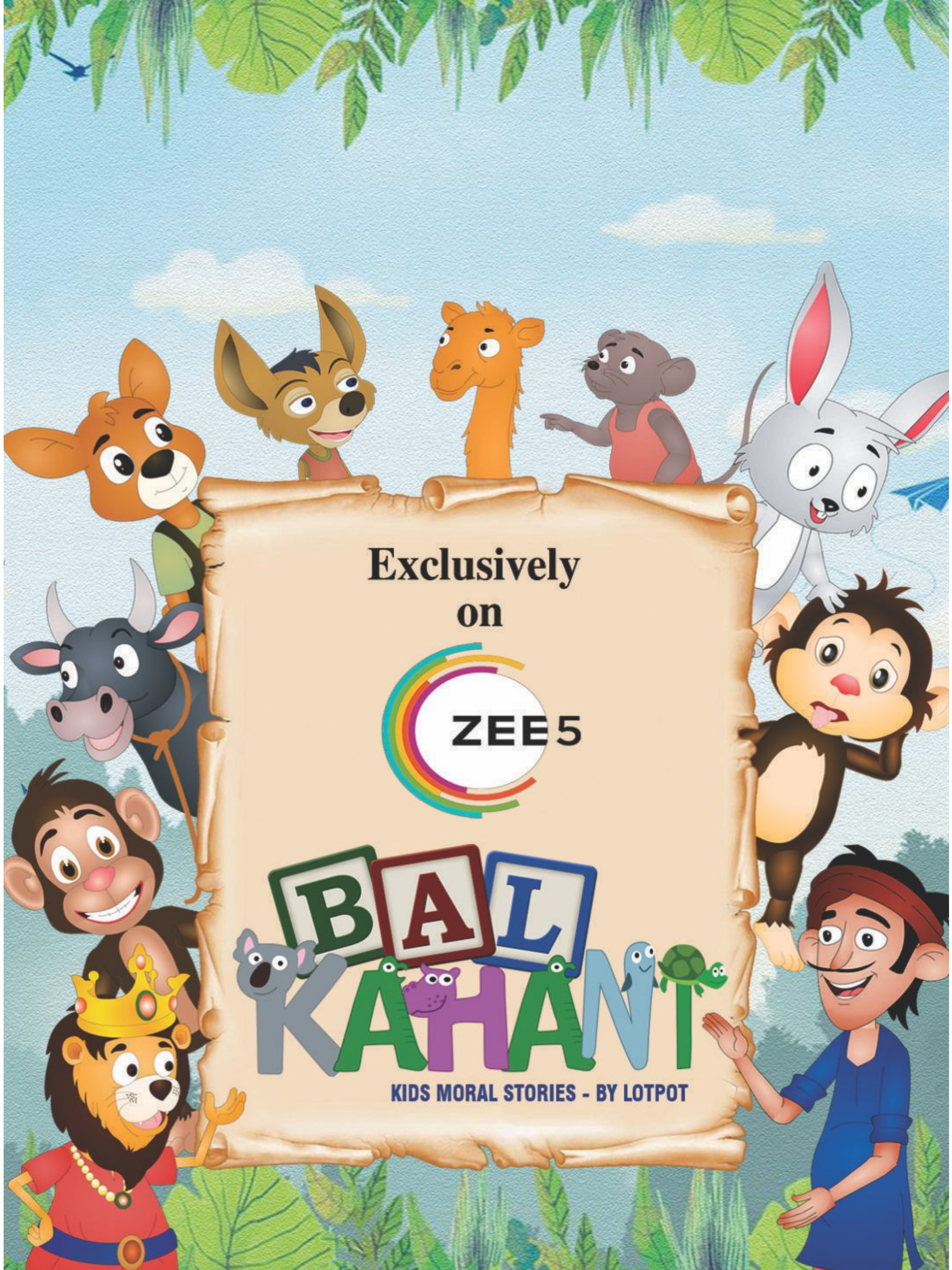
Exclusively
on
ZEE5
BAL
KAHANI
KIDS MORAL STORIES - BY LOTPOT